9726

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

आचार्य श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा, जि. गांधीनगर पीन-३८२००९

वर्ष : २७ अंक : ४ जुलाई : २००३

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 2261001 (U.P.)
Ph: 242017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 242790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 22201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २७ अंक - ४, जुलाई २००३

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor :, Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-2268-2655. e-mail - jbhawan@cal3.vsnl.net.in.

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	संस्मरण-एक अविस्मरणीय यात्रा का	श्रीमती राजकुमारी बेगानी	१९५
२.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	२०३
३.	श्री चन्द्रराज चरित्र		२०९
४.	जैन विद्या का अनुशीलन : विदेशिक दृष्टि	शास्त्री प्रकाश वर्मा	२१५
५.	समाचार सार		२२५
६.	संकलन		२३१

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

संस्मरण-एक अविस्मरणीय यात्रा का

श्रीमती राजकुमारी बेगानी

दिनांक जनवरी २००३ शुक्रवार को रात्रि साढ़ेग्यारह बजे भव्य अंजनशलाका एवं भगवती दीक्षा के निमित्त से आयोजित ३०० यात्रियों का एक विशाल संघ पालीताणा, गिरनार, शंखेश्वर आदि सौराष्ट्र के महान तीर्थों की यात्रा के लिए हावड़ा हापा सुपरफास्ट एक्सप्रेस द्वारा हावड़ा से राजकोट के लिए बड़े ही उत्साह एवं उल्लास पूर्वक संघपति श्रीमती मंजुला दफ्तरी एवं निशीथ दफ्तरी के स्नेहिल सान्निध्य में रवाना हुआ।

बहुत-बहुत पुरानी है हमारी यह तीर्थ यात्रा संघ परम्परा। इसका प्रारम्भ भगवान ऋषभदेव के काल से हुआ एवं प्रथम संघपति थे भरत चक्रवर्ती। प्रभु के ज्येष्ठ पुत्र, ऐसा शत्रुंजय रास बतलाता है–

भरत गयो वन्दन ने काज, ये उपदेश दियो जिनराज
जग में मोटा अरिहंत देव-चौसठ इन्द्र करे जसु सेव।
तेहकी मोटो संघ कहाय जे हमें प्रण में जिनवर राय।
तेहकी मोटो संघवी कह्यो-भरत सुणीने मन गहगहयो।

अर्थात चौसठ इन्द्रों द्वारा पूजित अरिहंत देव भी जिस संघ को वन्दन करते है उसका संघपति बनना बहुत बड़े सौभाग्य की बात है। कहाँ सीमा है उनके पुण्य की।

संघ दो प्रकार के हो गए है, पहला चतुर्विध संघ, जिसमें साधु-साध्वी श्रावक-श्राविकाएं चारों होते है। बड़े कठिन है इसके नियम। क्यों न हो पूज्य आचार्यों एवं मुनिराजों के तत्वावधान में होने के कारण इसमें सभी यात्री पदयात्रा करते हुए श्रावक की पूर्ण दिनचर्या को पालते हुए पूजन-वन्दन सामायिक, प्रतिक्रमण, आहार, विहार आदि सामूहिक रूप में ही करते है। दूसरा है मात्र श्रावक-श्राविकाओं का संघ जो कि वाहनों द्वारा किया जाता है।

देश काल और परिस्थितियों के अनुसार बदल जाता है युग धर्म एवं विधि निषेधों की परिभाषा किन्तु नहीं बदलती है मूल-भावना और मूल उद्देश्य। सभी तीर्थ यात्री शुभ परिणामों से भावित होते हुए ट्रेन में ही कोई

सामायिक कर रहा था, कोई ध्यान, कुछ भजन गा रहे थे तो कुछ आध्यात्मिक चर्चा कर रहे थे। कुछ भांति भाति के द्रव्यों या राशियों द्वारा संघ-पूजन कर रहे थे। संघपति को भी तिलक लगा माल्य प्रदान कर उनका बहुमान कर रहे थे। सेवा भावी कर्मठ कार्यकर्ता संघ को खिलाने-पिलाने के कार्यक्रमों में व्यस्त थे। फिर भोजन भी तो वैसा ही था भांति-भांति के मिष्ठान स्वादिष्ट पकवान और सात्विक भोजन। पानी भी था मिनेरल वाटर ताकि कोई यात्री बीमार न पड़ जाए। और संघपति उनका तो कहना ही क्या वे तो सोचते रहते थे कि संघ की कुशलता के लिए अधिक से अधिक क्या करें? उनकी यही सद्भावना ही तो पूरी ट्रेन में प्रसारित थी। तभी तो सब में प्रसन्नता कही किसी को न कोई शिकवा न कोई शिकायत।

दो दिन के ट्रेन सफर के पश्चात् हम सायंकाल पहुंचते हैं राजकोट और वहां से आरामदेह बसों द्वारा पहुँचे चर्चित बहु प्रतिक्षित तीर्थ गिरनार की तलहटी में। बड़ी ही सुन्दर स्वच्छ और विशाल थी धर्मशाला। उतनी ही अच्छी थी व्यवस्थापकों की व्यवस्था।

३ फरवरी को हम ऊषाकाल में ही रवाना हो जाते रैवताचल अर्थात् गिरनार की यात्रा को। अपनी-अपनी दैहिक शक्ति के अनुसार कोई पैदल चढ़ रहा था तो कोई डोली में। बड़ी तेज ठण्डी हवा चल रही थी। सब सर्दी से थरथरा रहे थे। फिर भी मन था प्रफुल्लित दुर्लभ सेवा पूजा वन्दन की भावना से। अत्यन्त महिमामय है गिरनार। क्यों न हो भगवान् नेमिनाथ के यहाँ दीक्षा, केवल ज्ञान और मोक्ष तीनों ही कल्याणक हुए हैं। कहते हैं आगामी चौवीसी के सभी तीर्थंकर इसी पर्वत पर मोक्ष जाएँगे। आज भी वहां का कण-कण अतीव शुभ परिणामों से उल्लसित है पुनीत है। मानों सर्वत्र बिखरे हुए है भगवान की भाषा परमाणु के पुद्गल।

भव्य मन्दिरों, दुर्लभ प्राचीन जिनबिम्बों के दर्शन-पूजनकर धन्य हो गया जीवन, पुलकित हो गया तन-मन।

पहाड़ पर ही तैयार था चाय नास्ता और नीचे उतरते ही धर्मशाला में मिला गरमा-गरम भोजन। रात्रि में तलहटी मन्दिर में भजन-कीर्तन आरती के पश्चात् हुआ रात्रि शयन।

४ फरवरी को सुबह हम प्रस्थान कर जाते हैं। पालीताणा की ओर।

राह में सर्वप्रथम आया चन्द्र प्रभास पाटण। वहां दर्शन किए अति प्राचीन और मनमोहक मूलनायक भगवान चन्द्र प्रभु के एवं अन्यान्य भव्य

जिन प्रतिमाओं के। सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक सोमनाथ के भी दर्शन किए। पाटण में ही देखा पूर्ण शान्ति के साथ लहराते हुए अरब सागर को। निस्तब्ध थी उसकी आन्तरिक हलचल, जिसने कि न जाने कितने बर्बर संहार को, रक्त पात को, लूटपाट को, भयंकर उत्थान-पतन को संजोए हुए है अपने विशाल वक्ष में।

आवास में लौटकर चाय-नाश्ताकर पूर्ण स्फूर्ति के साथ हम रवाना हो जाते है प्राचीनतम तीर्थ अजाहरा की ओर। यहाँ आकाश वन्दन किया मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की लाल विलेपण युक्त मनोहारिणी प्रतिमा को। कठिन है इसकी प्राचीनता का सही अनुमान लगाना। कहते है २०वें तीर्थंकर मुनिसुव्रत स्वामी के शासन काल में रघुवंश के वीर प्रतापी राजा अजयपाल का रोग शान्त हुआ था इस अलौकिक प्रतिमा के न्हवण-जल से। अतः हर्षित राजा ने यहां गांव बसाकर इस चमत्कारिक प्रतिमा को प्रतिष्ठित करवाया। यात्रियों ने यहां पूजन-वन्दन कर स्वयं को कृतार्थ किया। तत्पश्चात् भोजन कर हम चल पड़ते हैं 'महुआ' तीर्थ की ओर।

महुआ का प्राचीन नाम है मधुमती। यहां भगवान महावीर की पद्मासनस्थ, श्वेत वर्णीय अतिविराट प्रतिमा है। प्रभु वीर की इस प्रतिमा को उनके जीवित काल की बताया जाता है। अतः यह जीवन्त स्वामी के नाम से प्रसिद्ध है। इसे भगवान् के बड़े भाई नंदीवर्द्धन ने बनवाया था। इसके अतिरिक्त अन्यान्य प्रतिमाएँ भी बहुत विशाल, भव्य एवं अलौकिक थी। उनका दर्शन कर चमत्कृत हो उठता है, मुग्ध हो उठता है मन।

अब हम आ पहुंचते है महान शाश्वत तीर्थ पालीताणा। छोटी सादड़ी 'राणकपुर' नामक यह धर्मशाला भी नवीन, स्वच्छ, सुन्दर, विशाल और आधुनिक सुविधाओं से युक्त थी। यहां आकर संघ ने रात्रि-विश्राम किया।

५ फरवरी को प्रातःकाल हम रवाना हो जाते हैं सिद्धाचल पर विराजित अनुपमेय मन्दिरों के दर्शन-पूजन को। यहां भी चढ़ रहे हैं कुछ पैदल कुछ डोली से। अनन्त सिद्धों के निर्वाण स्थल परम पुनीत पर्वत पर नमो सिद्धाणं जपते हुए हम चढ़ते जाते हैं, हृदय में उतारते जाते हैं यहां के नयनाभिराम हृदय हारी प्राकृतिक दृश्यों को। नव टूंकों के दर्शन के पश्चात् हम प्रविष्ट होते है मूलनायक भगवान आदीश्वर नाथ के विशाल मन्दिर में। मन्दिर क्या था स्थापत्य कलाका एक अद्भुत नमूना। क्या थे? सभा मंडप के ऊपरी हिस्से में अंकित कलात्मक रूप से नृत्य-गान करती हुई वाद्य-यंत्र

बजाती हुई, विभिन्न मुद्राओं में प्रभु भक्ति को व्यक्त करती हुई, रमणीक अप्सराओं के भित्ति-चित्र? उनके वक्ष पर लहराती मुक्ता मालाएँ, हाथों में नीचे की ओर खिसकते रत्न जड़ित कंगन, कमर में सज्जित मेखलाएँ उन नृत्यरता की सुरताल का द्रुतगति का आभास करा रहे थे। मन चमत्कृत ही नहीं विवश था उन कलात्मक कृतियों के विषय में कुछ सोचने को कुछ विचारने को। विभोर था मन, पुलकित था तन।

अन्ततः एक लम्बी कतार पारकर प्राप्त हुआ प्रभु की उस विशाल प्रतिमा के पूजन का सौभाग्य। किन्तु कुछ ही क्षणों के लिए। क्यों कि अनेक पूजार्थी जो खड़े थे इस क्षणभर के पूजन के लिए। मन्दिर की बाहरी गैलेरी में विराजित भगवान आदिनाथ की प्रतिमा के नवअंग भेटकर मन को तृप्त किया। मन्दिरों की नगरी इस तीर्थ के एक से एक सुन्दर भव्य मन्दिरों में पूजन-दर्शन कर सायं ४ बजे हम उतर पाते है पर्वत से। पालीताणा तो एक जैन - नगर है जैन संस्कृति से ओत-प्रोत है देश के अन्यान्य नगरों से अलग।

६ तारीख को मन्दिरों का दर्शन पूजन कर हम पहुंचते हैं दीक्षा समारोह के विशाल पण्डाल में। देखा–वह सुसज्जित पण्डाल खचाखच भरा था दर्शको से। उपाध्याय श्री मणिप्रभ सागर जी एवं आर्यारत्न साध्वी श्रीजी के सानिध्य में प्रारम्भ हुआ अल्पवयस्का तीन कुमारी बालिकाएँ एवं एक बालक का अपूर्व दीक्षा समारोह। कार्यक्रम का संयोजन कर रहे थे सुप्रसिद्ध श्री मनोजजी हरण। बड़ा ही हृदय विदारक था वह कार्यक्रम। मुमुक्ष हंस रहे थे और हम सांसारिक रो रहे थे। संयोजन इतना मार्मिक था कि दिल थाम कर ही सब कुछ देख रहे थे सुन रहे थे। लगा–जैसे हम कोई वैराग्य भरा शान्त रस का सीरियल देख रहे हैं। दीक्षा कार्यक्रम के पश्चात् श्री मणिप्रभ सागर जी महाराज ने मंत्रोच्चार पूर्वक संघपति को धर्माशीष दिया। और वहां उपस्थित दानवीर्य धर्म प्राण श्रेष्ठियों ने भी लाखों की बोलियां लेकर दफ्तरी परिवार का अभिनन्दन किया।

दिनांक ७ फरवरी को पालीताणा के मन्दिरों का दर्शन पूजन कर, भोजन के पश्चात् हम प्रस्थान कर जाते हैं शत्रुंजय तीर्थ की पंचतीर्थी के लिए।

पालीताणा से निर्मल जल भरी मध्याह्न की धूप में स्वर्ण सी चमकती पवित्र शत्रुजंय नदी के किनारे-किनारे हम पहुचते हैं हस्तगिरि। यहां के मूलनायक भगवान हैं आदिनाथ। कहते है भगवान के ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती ने इस तीर्थ की स्थापना की थी। यह भी कहा जाता है कि भरत चक्रवर्ती इसी स्थान से मोक्ष पधारे थे।

भरत चक्रवर्ती जब-जब अयोध्या से प्रभु दर्शन करने शत्रुंजय आते तो इसी जगह उनके हाथियों का विशाल समूह रहता था। उन्हीं में से एक हाथी अनशन कर इसी स्थान से स्वर्ग प्राप्त किया इसीलिए इस तीर्थ का नाम पड़ा हस्तगिरि।

मन्दिर के चारों ओर अवस्थित है बावन जिनालय। जिनमें एक से एक है मनमोहक सुंदर एवं आकर्षक प्रतिमाएँ। यहां के दर्शन-पूजन के पश्चात् हम पहुंचते है तलाजा अर्थात् तालध्वज तीर्थ पर। यह तीर्थ पहाड़ पर स्थित है। यह भी अत्यन्त प्राचीन है। इसकी प्राचीनता का अनुमान तो पहाड़ पर बनी छोटी बड़ी हर गुफाओं से ही सिद्ध हो जाता है। यहां के मूलनायक भगवान सुमतिनाथ है। मन्दिर के चारों ओर बने बावन जिनालयों के अतिरिक्त यहां चिन्तामणि पार्श्वनाथ एवं भगवान महावीर की भव्य प्रतिमाएँ स्थापित है। यहां का गांव मन्दिर भी दर्शनीय है जहाँ शान्तिनाथ एवं मल्लीनाथ भगवान् की प्रतिमाएं विराजित है।

भोजन एवं विश्राम के पश्चात् हम रवाना हो जाते है कदम्बगिरि की ओर।

यह तीर्थ भी पहाड़ पर अवस्थित है। मूलनायक भगवान आदिनाथ के, अरिहन्त भगवान् नेमिनाथ और सीमंधर स्वामी की विराट एवं भव्य प्रतिमाएँ भी यहां के जिनालयों में स्थापित हैं। यहां भी चारों ओर है बावन जिनालय। कदम्बगिरि से उतरकर हम रवाना हो जाते हैं नवनिर्मित बांध के समीप स्थित पार्श्वनाथ जिनालय में। बड़ी ही मनोहारिणी है भगवान पार्श्व की श्यामवर्णी विराट प्रतिमा। यहां चैत्यवन्दन कर हम पुनः लौट आते हैं पालीताणा।

सात फरवरी को रात्रि के समय धर्मशाला के एक विशाल हॉल में एकत्रित होकर संघ ने संघ पतियों का हार्दिक अभिनन्दन किया। यात्रियों ने श्रद्धानुसार कुछ राशि एवं माल्य प्रदान कर दफ्तरी परिवार को सम्मानित किया। साथ ही सम्मानित किया दफ्तरी परिवार के कुटुम्बी जनों ने भी। दफ्तरी परिवार ने भी पूजा के लिये चांदी की रकेबी कटोरी और साथ में मेवे का पैकेट भेटकर संघ के प्रत्येक सदस्य को सम्मानित किया। सामूहिक रूप से संघ-पूजन के लिए एकत्रित किए रूपयों को प्रभावना के रूप में दिया गया। इसके अतिरिक्त अन्य लोगों ने भी प्रभावना देकर संघ को सम्मानित किया।

८ फरवरी को पालीताणा के मन्दिरों का दर्शन-पूजन कर हम पहुंचे एक अपूर्व भव्य प्रतिष्ठा समारोह में। प्रतिष्ठा करवा रहे थे परमपूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर जी एवं खरतरगच्छ दीपिका आर्यारत्न श्री शशिप्रभाजी। भक्तामर की ४८ गाथाओं की ४८ देहरियों की प्रतिष्ठा हुई। साथ ही दादागुरु देव एवं पद्‌मावतीजी की प्रतिमाएँ भी प्रतिष्ठित की गयी। नव-निर्माण एवं जीर्णोद्धार के इस महान पुण्यकारी कार्य में उदारमना दानवीर श्रेष्ठियों ने भी दिल खोलकर ऊँची-ऊँची बोलियां लेकर अपने धन का सदुपयोग करते हुए अनन्त पुण्य का उर्पाजन किया। देश के कोने-कोने से आए श्रद्धालु यात्रियों के कारण आपार भीड़ थी। फिर भी निर्माणाधीन धर्मशाला में स्थान-स्थान पर लगे टी.वी. के कारण सबके लिए कार्यक्रम देखना सुलभ हो गया था।

भोजन के पश्चात महाराज श्री का आशीर्वाद ग्रहण कर पालीताणा से प्रस्थान कर वल्लभीतीर्थ पहुंचते हैं। यहां आदीश्वर भगवान की श्वेतवर्षीय पद्‌मनास्थ विशाल प्रतिमा विराजित है। बहुत प्राचीन है इसका इतिहास भी। कभी यह शत्रुंजय तीर्थ की तलहटी थी। जैन आगमों को प्रथमबार यंहां लिपिबद्ध किया गया था जो कि वल्लभी वाचना के नाम से प्रसिद्ध है। 'शत्रुंजय महात्म्य' ग्रंथ की रचना आचार्य श्री धनेश्वर सूरि जी के द्वारा इसी स्थान पर की गयी थी। मन्दिर के तल भाग में देवाधिश्रमण आदि पांचसौ आचार्यो की प्रतिमाएँ बड़े ही कलात्मक ढंग से बनायी गयी हैं।

वल्लभीपुर से निकल कर हम पहुंचते है अयोध्यापुरम में। यहाँ भगवान आदिनाथ का बहुत बड़े परिसर में एक विशाल एवं भव्य मन्दिर निर्माणाधीन है। भगवान की प्रतिमा साढ़े तीन सौ टन क़े एक विशाल पाषाण खण्ड को काटकर तरासकर बनायी गयी है। डेढ़ सौ टन की साढ़े तेइस फुट ऊँची यह खड़ी प्रतिमा मन को मुग्ध एवं चमत्कृत करती है। प्रतिमा का चांदी का मुकुट सौ किलो का है।

यहाँ से हम पहुंचते है श्री उपरियालाजी तीर्थ यहां मूलनायक भगवान् आदिनाथ भगवान की चन्दन वर्णीय पद्‌मासनस्थ प्रतिमा है। बड़ी ही मनोरम एवं आकर्षण है यह प्रतिमा। प्राचीन समय से यह क्षेत्र प्रतिमाओं के कारण बड़ा चमत्कारी रहा है। कहते हैं रत्ना कुम्हार को स्वप्न में अपने खेत में जिन प्रतिमाओं के होने का संकेत मिला। खुदायी के द्वारा प्राप्त प्रतिमाओं उसने सहर्ष श्रावकों को सौंप दिया। श्रावकों ने भी सानन्द प्रतिमा को ग्रहण

कर एक सुन्दर मंदिर बनवाकर विक्रम सम्वत १७२० कार्तिक पूर्णिमा के दिन प्रतिमाओं को धूमधाम से प्रतिष्ठित करवाया। दिनों दिन यहां होने वाले चमत्कारों के कारण तीर्थ की महिमा बढ़ती जा रही है।

यहाँ दर्शन वन्दन कर हम पहुंचते हैं सुप्रसिद्ध तीर्थ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ। यहीं की धर्मशाला में रात्रि विश्राम कर दिनांक ९ फरवरी को प्रभु-पूजन दर्शन को चल पड़ते हैं। इस तीर्थ में भगवान् पार्श्वनाथ की पद्मानस्थ श्वेत वर्णीय लगभग ६ फुट की विशाल मनोहारिणी प्रतिमा है। विशाल परकोटे के मध्य देवविमान जैसा शिखरबद्ध मन्दिर चारों ओर से बावन जिनालय युक्त है। कहते है जरासंघ व कृष्ण के युद्ध के समय जराग्रस्त सेनापर इस अलौकिक प्रतिमा का न्हवण जल छिड़कने से सेना सचेत होकर पूर्णावस्था में आ गयी थी और उपंद्रव भी शान्त हुआ। अन्य भी न जाने कितने ही चमत्कार इस प्रतिमा के साथ जुड़े हुए है। शंखेश्वर पार्श्व प्रभु की प्रतिमा का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है बड़ा ही महिमामय है तीर्थ। यहां वंदन-पूजन कर सभी ने स्वयं कृतकृत्य किया। धर्मशाला के समीप ही एक भव्य मन्दिर है प्रभु पार्श्वनाथ का । उसके चारों ओर भगवान के १०८ नामों की प्रतिमाएँ जिनालयों में विराजित है। यहां भी हम लोगों ने पूजन-वंदन किया।

यहाँ से प्रस्थान कर रात्रि के समय हम पहुंचते हैं कलिकुंड पार्श्वनाथ। कलिकुंड तीर्थ घोलका नगरी में है। कलिकुण्ड पार्श्वनाथ की भी श्वेत वर्णीय प्रतिमा प्राचीन एवं चमत्कारी है। युग प्रधान आचार्य श्री जिनदत्त सूरिजी की यह जन्म स्थली है। यहां की दादाबाड़ी भी दर्शनीय है। यहां चारों दादाजी की खड़ी प्रतिमाएँ विराजमान है। रात्रि में हमने मंदिर में भजन किया एवं आरती के पश्चात् यहां की धर्मशाला में रात्रि शयन किया। प्रातःकाल प्रभु की वासक्षेप पूजाकर बस द्वारा अहमदाबाद के लिए रवाना हो गए।

हमारी यह यात्रा बड़ी ही सुखद एवं भावभक्ति पूर्ण थी। यह सब सम्भव हुआ उदारमना स्वधर्मीवात्सल्य से पूर्ण हृदया, निरभिमानी, धर्मप्राण संघपति श्रीमती मंजुलाजी एवं उनके पुत्र निशीथकुमार जी के कारण। मंजुलाजी को अभिमान तो छू तक नहीं गया है। अभिमान एक ऐसा दुर्गुण है जो अच्छे से अच्छे गुणों को भी ढक देता है। वे यात्रियों की कुशलता के लिए सदैव चिंतित एवं तत्पर रहती थी। वे प्राथमिकता देती थी संघ की सुख सुविधा को। स्वयं को तो जैसे भूल ही गयी थीं। सबके उठने से पूर्व उठना

सबके पश्चात् सोना उनकी नित्य दिनचर्या में सम्मिलित था। यात्रियों के मध्य ही था उनका सोना-बैठना खाना-पीना। अलग से कोई आवास नहीं। संघ के मंगल के लिए वे आयंविल उपवास करती रहती थी। यदि कोई भी यात्री अस्वस्थ होता तो वे तन-मन से जुट जाती उसकी सेवा सुश्रुषा के लिए। बस के अतिरिक्त साथ में कुछ गाड़ियां भी थी उसे वे अपने व्यवहार में न लाकर बुजुर्गों एवं अस्वस्थों को बड़े सम्मान एवं आग्रह पूर्वक बैठाती थी। उनकी इसी विनयशीलता ने सबको मुग्ध कर दिया था।

हम नहीं भुला सकते हैं श्रीजैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ के उन स्नेहिल व्यवस्थापकों को। उनकी सेवा भावना, उनकी कर्मठता उनकी सूझबूझ एवं कार्यकुशलता के कारण ही मंगलमय रही यह यात्रा। कही कोई अप्रिय घटना नहीं हुई। उन्हे जितना भी धन्यवाद दिया जाय उनके कार्यो के आगे छोटा ही है।

सुबह करीब साढ़े नौ बजे हावड़ा एक्सप्रेस से अहमदाबाद से हावड़ा के लिए हम प्रस्थान कर जाते हैं। १० और ११ फरवरी की ट्रेन यात्रा के पश्चात् १२ फरवरी को प्रातःकाल हावड़ा सकुशल पहुंच जाते हैं।

कलकत्ते में रविवार पूर्णिमा के दिन फिर सभी यात्रियों को आमंत्रित किया गया गुरुदेव महाराज की पूजा के लिये।बड़ी धूम-धाम भक्ति भाव से पूजा मनायी गयी एवं बाद में था अल्पाहार। सभी यात्री एकबार फिर मिलकर बड़े प्रसन्न हुए।

फागुन बदी अमावस्या को दादाश्रीजिनकुशल सूरिजी की स्वर्गारोहणतिथि के उपलक्ष में दादाबाड़ी में बड़ी पूजा की गई और था संघ का स्वामीवच्छल। उसी पुनीत अवसर पर श्री खरतरगच्छ महासंघ ने संघपति दफ्तरी परिवार एवं कर्मठ कार्य कर्ताओं का भी हार्दिक अभिनंदन किया गया। सभी ने संघपति के प्रति अपने-अपने हृदय के उद्‌गार और आभार प्रकट किए। किन्तु सुश्री धापीबाई सुराना का उद्‌गार उल्लेखनीय है उन्होंने अवरुद्ध हुए आनन्द से गद्‌गद् कण्ठ से कहा कि मैं तो संघपतियों को जानती भी नहीं थी फिर भी उन्होंने जो किया कोई अपना भी नहीं कर सकता।

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

प्रतिज्ञा विभाग—देहाभ्यास का त्याग परमात्मा बनने की भूमिका है। देहाभ्यास के कारण ही बारंबार हम बहिर्मुखी हो जाते है। जहाँ देह का महत्व रहता है या बढ़ जाता है, वहाँ आत्मा लुप्त या गौण हो जाता है। यहाँ प्रतिमा का अर्थ है कि मैं शुद्ध आत्मा हूँ मैं इस शरीर का त्याग कर रहा हूँ। इस शरीर के साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। इसको बचाने का कोई उपाय या आयोजन नहीं करूँगा। शरीर के ऊपर की प्रतिक्रिया मेरे स्वभाव से मूल गुणो से पूर्णरूप में स्वतन्त्र और विपरीत है। मैं एक स्वतन्त्र सर्वशक्ति सम्पन्न आत्मा हूँ।

इस सूत्र में अप्पाणं वोसिरामि

प्रतिज्ञा विभाग है।

नामस्तव सूत्र (लोगस्स सूत्त)

भूमिका—इस लोगस्स सूत्र में वर्तमान काल के २४ तीर्थंकर परमात्माओं की स्तुति करने के बाद २,३,४ गाथा में वर्तमान के २४ तीर्थंकर परमात्माओं के नामोच्चारण पूर्वक स्तुति है। अन्तिम तीन गाथा में प्रार्थना है। तीर्थंकर परमात्मा हमारे लिए परमोपकारी है। इनके जैसा ही हमें बनना है । इनकी करुणादृष्टि से ही हम आज इस विषम काल में यत्किंचित मोक्ष मार्ग की साधना कर रहे है। और आगे भी इनकी कृपा के सिवाय कुछ भी संभव नहीं है। यह सूत्र शाश्वत है, मात्र प्रत्येक चौबीसी में नाम बदल जाता है। परोपकारी परमात्मा को स्मरण करके ध्यान करके जीवन पवित्र बनाया जाता है।

शास्त्रीय नाम—नामस्तव सूत्र।

लौकिक नाम—लोगस्स सूत्र।

सारांश—जिन्होंने संसार को ज्ञान द्वारा प्रकाशित किया, ऐसे परम आराध्य २४ तीर्थंकर परमात्माओं को आत्मशुद्धि के लिए वंदन हो, २४ तीर्थंकरों की स्तवना करके उनके पास आरोग्य, बोधिलाभ, समाधि और

मोक्ष की कामना करते है।

मूल सूत्र—

लोगस्स उज्जो अगरे,
धम्म-तित्थयरे जिणे,
अरिहंते कित्तइस्सं,
चउवीसंपि केवली ।।१।।
उसभ-मजिअं च वंदे,
संभव-मभिणंदणं च सुमइं च,
पउमप्पयं सुपासं,
जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।२।।
सुविहिं च पुप्फदंतं,
सीअल-सिज्जंस-वासु पुज्जं च ;
विमल-मणंतं च जिणं,
धम्मं संतिं च वंदामि ।।३।।
कुंथुं अरं च मल्लिं,
वंदे मुनि-सुव्वयं नमिजिणं च ;
वंदामि रिट्ठनेमिं,
पासं तह वद्धमाणं च ।।४।।
एवं मए अभिथुआ,
विहुय रयमला, पहिण-जरमरणा ;
चउवीसं पि जिणवरा,
तित्थयरा मे पसीयंतु ।।५।।
कित्तिय-बंदिय-महिया,
जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा,
आरुग्ग-बोहिलाभं,
समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।६।।
चंदेसु निम्मलयरा,
आइच्चेसु अहियं पयासयरा ;
सागरवर-गंभीरा,
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।७।।

शब्दार्थ—

लोगस्स	-	संसार में।
उज्जो अगरे	-	प्रकाश करने वाले।
धम्मतित्थयरे	-	धर्मतीर्थ की स्थापना करने वाले,
जिणे	-	जिनेश्वर।
अरिहंते	-	अरिहंत भगवन्तो को।
कित्त इस्सं	-	नाम स्मरण पूर्वक कीर्तन करूंगा।
चउवीसं पि	-	चौबीश भगवान को।
केवली	-	केवल ज्ञानी।
उसभं	-	ऋषभदेव को।
अजिअं	-	अजितनाथ को। च-और।
बंदे	-	वंदन करता हूँ।
संभवं	-	सम्भवनाथ को।
अभिणंदणं	-	अभिनन्दन स्वामी को।
सुमइं	-	सुमतिनाथ को।
पउमप्पहं	-	पद्मप्रभ स्वामी को।
सुपासं	-	सुपार्श्वनाथ स्वामी को।
चंदप्पहं	-	चन्द्रप्रभ स्वामी को।
सुविहिं	-	सुविधिनाथ। च – अथवा।
पुप्फदंतं	-	पुष्पदन्त को।
सिअल	-	शीतलनाथ स्वामी को।
सिंज्जंस	-	श्रेयांसनाथ स्वामी को।
वासुपुज्जं	-	वासुपूज्य स्वामी को।
विमलं	-	विमलनाथ स्वामी को।
अनंतं	-	अनन्तनाथ स्वामी को।
धम्मं	-	धर्मनाथ स्वामी को।
संतिं	-	शांतिनाथ भगवान को।
वंदामि	-	वंदन करता हूँ।
कुंथुं	-	कुंथुनाथ भगवान को।

अरं	-	अरनाथ भगवान को।
मल्लिं	-	मल्लीनाथ भगवान को।
मुनिसुव्वयं	-	मुनि सुव्रत स्वामी को।
नमिजिणं	-	नमिनाथ भगवान को।
रिट्ठनेमिं	-	अरिष्ठ नेमि (नेमिनाथ) भगवान को।
पासं	-	पार्श्वनाथ भगवान को।
तह	-	तथा।
वद्धमाणं	-	वर्धमान (महावीर) स्वामी को।
एवं	-	इस प्रकार। मए - मेरे द्वारा।
अभिथुआ	-	की हुई स्तुति।
विहुय रयमला	-	रज (धूल) और मल रहित।
पहिण जरमरण	-	वृद्धत्व और मृत्यु से दूर।
जिणवरा	-	जिनेश्वर भगवान।
तित्थयरा	-	तीर्थंकर। मे - मेरे ऊपर।
पसियंतु	-	प्रसन्न हो।
कित्तिय	-	कीर्तन किया हुआ।
बंदिया	-	बंदन किया हुआ।
महिया	-	पूजन किया हुआ।
जे - जो।		ए - ये।
लोगस्स	-	लोक में, विश्व में।
उत्तमा-उत्तम श्रेष्ठ ।		सिद्धा - सिद्ध हुए है।
आरुग्ग	-	आरोग्य।
बोहिलाभं	-	बोधि लाभ-सम्यग् दर्शन का लाभ
समाहिवर	-	श्रेष्ठ समाधि।
दिंतु - देवे		चंदेसु - चन्द भी।
निम्मलयरा	-	अतिशय निर्मल।
आइच्चेसु - सूर्य से भी।		अहिंयं - अधिक।
पयासयरा	-	प्रकाश कारी।
सागरवर गंभीरा	-	सागर से भी अति गंभीर।

सिद्धा - मोक्षस्थ परमात्मा।
सिद्धि - सिद्धि को। मम - मुझे।
दिसंतु - देवे।

भावार्थ—अखिल विश्व में केवलज्ञान द्वारा प्रकाशित करने वाले, धर्मरूपी तीर्थ स्थापक, राग-द्वेषरूपी आन्तर्शत्रुजयी, केवलज्ञानी चौवीश तीर्थंकर परमात्मा का कीर्तन करूंगा।

ऋषभदेव भगवान और अजितनाथ भगवान को वंदन करता हूँ। संभवनाथ अभिनन्दन स्वामी और सुमतिनाथ भगवान को पद्मप्रभ स्वामी और सुपार्श्वनाथ तथा राग-द्वेष विजेता चन्द्र प्रभ स्वामी को वंदन करता हूँ।

सुविधिनाथ भगवान जिनका अपरनाम पुष्पदन्त स्वामी है, शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ और वासुपूज्यस्वामी, विमलनाथ राग-द्वेष विजेता अनन्तनाथ धर्मनाथ, शांतिनाथ भगवान को वंदन करता हूँ।

कुंथुनाथ, अरनाथ और मल्लीनाथ भगवान तथा मुनि सुव्रत स्वामी और राग-द्वेष विजेता नमिनाथ भगवान को वंदन करता हँ। अरिष्ठनेमि (नेमिनाथ) पार्श्वनाथ, और वर्धमान (महावीर स्वामी) को वंदन करता हूँ।

इस प्रकार मेरे द्वारा स्तुति किया हुआ, कर्मरजरूपी मल से मुक्त, जरा-मृत्यु तथा ऐसे राग-द्वेष को जीतने वाले चौबीश तीर्थंकर परमात्मा मेरे ऊपर प्रसन्न होवें।

जितका कीर्तन किया गया, वंदन किया गया, पूजा की गई, जो इस सम्पूर्ण लोक में उत्तम सिद्ध है, वे आरोग्य बोधिलाभ और श्रेष्ठ समाधि देवें।

चन्द्र से भी निर्मल, सूर्य से भी अधिक प्रकाश कारी, स्वयंभूरण समुद्र से भी अधिक गम्भीर सिद्ध परमात्मा मुझे परमपद सिद्धि (मोक्ष) दें।

विवेचन—नित्य करने योग्य क्रिया को नित्यकर्म कहते है। जैन शासन में आराधको के लिए छः आवश्यक बताये गये हैं। जो सुबह और शाम करणीय है।

छ आवश्यक—

(क) सामायिक (ख) चतुर्विंशतिस्तव (ग) वंदन (घ) प्रतिक्रमण (ङ) कायोत्सर्ग (च) पच्चक्खान।

इन छः आवश्यक जो एक साथ किये जाते हैं, उसको प्रतिक्रमण कहते है। इस प्रतिक्रमण में इन छः आवश्यक का पालन होता है। इन छः आवश्यक में दूसरा आवश्यक चतुर्विंशतिस्तव है। इस लोगस्स सूत्र द्वारा २४ तीर्थंकर भगवान की स्तुति की गई है।

इस सूत्र की प्रथम गाथा में परमात्मा के चार अतिशयों का वर्णन किया गया है। लोगस्स उज्जोअगरे—इस पद द्वारा परमात्मा का ज्ञानातिशय का वर्णन किया गया है, क्योंकि अपूर्वज्ञान द्वारा सकल विश्व को प्रकाशित करते है।

धम्म तित्थयरे— इस पद द्वारा परमात्मा द्वारा वचनातिशय से विश्व जीव को प्रतिबोध करके धर्मतीर्थ स्थापना की बात है।

जिणे— राग-द्वेष रहित सर्वजीव कल्याण की कामना के लिए अपायापगमातिशय

अरिहंत— देव-देवेन्द्र से पूजित से पूजातिशय।

इन चौबीस अरिहंत परमात्मा को समानरूप में मानना चाहिए। यहाँ पर किसी को अधिक या अल्परूप में मानना अनुचित है। २-३-४ गाथा में परमात्मा के नामोल्लेख पूर्वक २४ वर्तमान के तीर्थंकरों को वन्दन किया गया है। अन्तिम गाथा में गुणगान है।

प्रश्न—परमात्मा राग-द्वेष रहित वीतराग है, तो प्रसन्न कैसे होते है?

उत्तर— सूत्र में लिखा है तित्थयरा में पसियंतु, इसका शाब्दिक अर्थ है हे परमात्मा मुझ पर प्रसन्न हो। प्रभु तो राग-द्वेष रहित हैं। वे न भक्ति करने पर प्रसन्न होते है और न ही विराधना करने पर अप्रसन्न। हाँ इनके नाम से की गई साधना हमारे मन को शुद्ध करती है, कर्म बन्ध से बचाती है, और पूर्व जन्म के संचित कर्म को नाश करती है। यहाँ साधक का कहने का भावार्थ है कि हमारी बुद्धि इतनी सत् हो कि हम आपको कभी न भूल सके। जब तक मोक्ष की उपलब्धि न हो आप हमारी स्मृति में ही रहे। यानि इस सूत्र में सभी श्रेष्टतम पदार्थ की कामना की गई है और ये भी आशा व्यक्त की गई हैं कि जब तक मुझे सभी बन्धनों से मुक्त होकर सिद्धत्व की उपलब्धि नहीं होगी तब तक वे उत्तम साधन मिलते रहें

क्रमशः

श्रीचन्द्रराजचरित्र

प्रकृति के गुरुत्वाकर्षण से खिंचे हुए ही कुमार दीपशिखा में केवल मनोरंजन के लिये पहुँचे थे। अपने दोस्त के साथ दीपशिखा की अपूर्व छटा को देखते हुए अपने पिता के अनन्य अनुरागी वरदत्त सेठ के घर में होनेवाले समारोह संगीत को अनजान अवस्था में देख सुन रहे थे। इतने में अचानक सेठ वरदत्त की दृष्टि श्रीचन्द्र कुमार पर जा पड़ी। उसने कुमार को पहचान लिया। भारी प्रसन्नता से बड़े आदर के साथ स्वागत करते हुए उसने कहा--अहा! सेठ लक्ष्मीदत्त के उदार कुमार श्रीचन्द्र के दर्शन पाकर मेरे नेत्र मेरा जन्म और मेरा यह घर आंगन पवित्र हो गये हैं। कुमार आप कहां ठहरे हैं? क्या आप मुझे नहीं जानते जो इस प्रकार अजनबी के रूप में दूर-दूर खड़े हैं। यह विशाल वैभव सब आप लोगों की कृपा का ही तो फल है फिर इस प्रकार परायेपन का भाव क्यों प्रकट किया जा रहा है। आइयें आज मेरे बच्चे के लेखशाला-प्रवेश संस्कार का समारोह चल रहा है। हे कुमार ! इस प्रकार अचानक आपके पुण्य पदार्पण से मेरे घर में सोने के सूर्य का उदय हुआ मैं मानता हूँ।

कुमार ने वरदत्त को पहचान लिया। यों ही क्रीड़ा करने के लिये घर से निकलना हुआ है और अतर्कित भाव से यहां आना हुआ है ऐसा कहते हुए कुमार को वरदत्तने बड़े अनुनय विनय और आदर के साथ घर में लिया। स्नान-भोजन आदि से अपूर्व सत्कार किया।

गुणचंद्र इस प्रकार रुकने से बहुत प्रसन्न हुआ। कुमार की आज्ञा से वरदत्त की प्रेरणा से गुणचन्द्र सुवेग रथ को इसी जगह ले आया।

दीपशिखा के व्यापारियों को पता चला कि कुशस्थल के नगर सेठ-लक्ष्मीदत्त के चिरंजीवी श्रीचंद्र कुमार यहां आये हैं। सबने उनका सुंदर स्वागत किया। सबके बीचमें बैठा श्रीचन्द्र शरद् ऋतु के पूर्ण चंद्र की तरह शोभा पाने लगा। वहां उपस्थित भाट चारणों ने कुमार को पहचान कर उनके दिव्य गुणों से भरे कीर्ति काव्य कहने शुरु किये। उस समय कुमार

और वहां का दृश्य बड़ा ही दर्शनीय हो रहा था।

उधर दीपशिखा के स्वामी दीपचन्द्र देव राजसभा में अपने मंत्री सामंत सेठ साहुकारों के साथ बिराजमान थे। तिलकपुर के मंत्री धीर भी बड़े आदरणीय स्थान पर महाराज के सामने बैठे थे। उन्हीं के साथ आया हुआ वीणारव नाम का मुख्य गायक दूसरे सोहल गायकों के साथ तरह-तरह की कला-बाजियों से राजा को प्रसन्न कर रहा था। अंत में उसने अनेक भाषाओं और राग रागणियों से युक्त श्रोताओं के कानों में अमृत जैसा श्रीचंद्र का निर्मल चरित्र गाना शुरु किया।

सभी सभासद ऊपर को गर्दन उठाये कान देकर मंत्र मुग्ध सुन रहे थे। राजा के पीछे की तरफ परदे की आड़ में बैठी हुई महारानी प्रदीपवती महाराजा की भतीजी राजा सुभगांग की रानी चन्द्रवती आदि रानियां भी बड़े चाव से सुन रही थी।

इस बीच में कोविदा और चतुरा नाम की दासियों ने आकर कुमारी चन्द्रकला के संकल्पों को स्पष्ट किया कि कुशस्थानपुर के श्रीचन्द्रकुमार के प्रति कुमारी का स्नेह हो चुका है। उद्यान में मन्दिर में कुमार को देखने के बाद कुमारी ने दृढ़ संकल्प कर लिया है कि इस जन्म में यदि पति होगा तो वह कुमार ही होगा। अतः आप लोग उचित प्रबंध करें।

इस बात को सुन कुमारी की माता चन्द्रवती ने कहा कि ऐसा कैसे हो सकता है। कुल-शील का पूरा पता लगे बिना अज्ञान अवस्था में कैसे यह संबंध हो सकता है?। चलो चाचाजी के पास चले और उन्हें इस समाचार से अवगत करें।

राजा दीपचन्द्र के पास पहुँच कर उनकी भतीजी रानी चन्द्रवती ने अपनी कन्या चन्द्रकला के सारे विचार कह सुनाये। सुनकर राजा कुछ हंसते हुए बोले–विवाह संबंध–जीवन संबंध कहा जाता है। बच्चों के बनाये मिट्टी के घर जैसा वह नहीं है जो जब चाहा बनाया, बिना कुल, शील, प्रभुत्व, विद्या, शरीर, धन आदि के विचार किये, विवाह की बात करनी भी हमें शोभा नहीं देती। एक अपरिचित मुसाफिर को कन्या दान करने में हमारा कोई यश न होगा। मेरे कंवर साहब राजा सुभगांग देव क्या कहेंगे ? राजन्यों में हम कैसे मुंह दिखायेंगे ?! बेटा चन्द्रवती! क्षमा करो। चन्द्रकला का

विवाह तो स्वयंवर से किसी राज-राजेश्वर के साथ ही करेंगे।

उधर चन्द्रकला जिनमंदिर में दर्शन पूजन विधि को करके अपनी माता के पास महल में पहुंची। रास्ते में चतुरा ने माता और मातामाह के द्वारा वर के विषय में जो अरुचि प्रकट की थी उसे राजकुमारी को सुना दिया। सुनते ही चन्द्रकला के हाथ पैर शिथिल हो गये। सिर घुमने लगा। वह बेहोश होकर भूमि पर गिर पड़ी। पास में सेवा में खड़ी सखियाँ शीतल उपचार करके बड़ी कठिनता से उसे होश में लाई। सारे राज महल में भारी तहलका मच गया।

यह सारी घटना दौड़ कर प्रियंवदा ने राजकुमारी की माता से कही। वह भी बहुत जल्दी से पुत्री के प्रेम से आकस्मिक हुई घटना के स्थल पर आ गई। पुत्री की वैसी दशा देखकर रानी कहने लगी बेटी! तुम इतनी उतावली होकर दुःखी क्यों होती हो? जरा धीरज धारण करो। तुम्हारे कल्याण में ही हम सबका कल्याण है। तुम स्वयं समझदार है। हमें तुम्हारे पाणिग्रहण की चिंता है। हम तुम्हारी इच्छा को एक बड़े भारी स्वयंवर में बहुत शीघ्र ही पूर्ण करने वाले है।

राजकुमारी ने मां को बीच में ही रोकते हुए कहा-माँ! सती कन्या एक बार जिसे मन से वर मान लेती है, उसे छोड़ किसी दूसरे को पति रूपमें स्वीकार नहीं करती है। मुझे स्वयंवर की अब कोई इच्छा नहीं । अन्तिम रूप से मैं आपको सूचित कर देना चाहती हूँ कि इस जन्म में कुशस्थल के श्रीचंद्र कुमार के साथ यदि मेरा ब्याह न हुआ तो मैं आग में जलकर अपने प्राणों को दे दूंगी।

पुत्री के इस अटल निर्णय को सुनकर रानीचंद्रवती बड़ी चिन्तित हुई। उसने सेवकों के साथ राजा दीपचन्द्र देव को कहलाया कि स्थिति यह है इसलिये आप श्रीचन्द्रकुमार की खोज करावें। चतुराने भी जाकर कुमारी के बेहोश आदि का सारा वृत्तान्त राजा से कह सुनाया।

यह सुन सभा-विसर्जन करके राजा दीपचन्द्र देव और रानी प्रदीवती वहां आये। बार-बार पूछने पर हिमालय की तरह अचल रहने वाली कुमारी ने उन सब को वही उत्तर दिया जो पहले अपनी माता को दे चुकी थी।

इस अवस्था में राजा ने सोचा इसके कल्याण के लिये ही हमारा स्वयंवर आदि का विचार था। जब कि यह चाहती है, और यदि चाहने के

मुताबिक काम न हुआ तो यह मरना चाहती है। ऐसी अवस्था में हमारे आग्रह का भी न रहना श्रेयस्कर है, आखिरकार विवाह से जो फलाफल होना है वह इन्ही को तो होगा। हम लोग तो निमित्त मात्र हैं। इसमें भी प्रधानता पूर्वकृत-कर्म संस्कारों की ही रहेगी न?

इस प्रकार सोचते-सोचते राजा ने श्रीचन्द्र–कुमार की बड़े जोरों से खोज करनी शुरु करदी। थोड़े ही समय में वरदत्त सेठ के घर में होने की खबर भी मिल गई। वे शीघ्र ही वरदत्त सेठ के घर पहुंचे। वहां रूप में कामदेव का तिरस्कार करने वाले श्रीचन्द्र को देखकर राजा दीपचन्द्र देव आश्चर्य-चकित हो गये।

राजा को अपने घर पर आये देख वरदत्त स्वागत के लिये शीघ्रता से उठ खड़ा हुआ। उपस्थित व्यक्तियों के व श्रीचन्द्र के साथ उनके सन्मुख जाकर बड़े आदर से उन्हें लिवा लाया। एक रत्नजटित स्वर्ण-सिंहासन पर राजा के बैठ जाने पर श्रीचन्द्र ने राजा को प्रणाम किया । राजा दीपचन्द्र ने भी बड़े प्रेम से कुमार को गोद में बैठाया और किसी अज्ञात दौहित्र-सुख का अनुभव किया। ज्योंही वरदत्त ने कुमार का परिचय दिया, त्योंही वीणारव गायक ने कहा देव! ये वे ही श्रीचन्द्र कुमार हैं जिनकी कीर्ति–कथा हमने प्रबन्ध में गाई थी। यह कुमार याचकों के लिये कल्प–वृक्ष के जैसे हैं। हम सदा इनकी जय मनाते हैं।

इधर चन्द्रकला को लेकर प्रदीवती और चन्द्रवती भी कुमार को देखने की उत्कंठा से वहां वरदत्त के घर ही आ पहुँची। शुभ–लक्षण और गुणों से संपन्न कुमार को देखकर सभी बोल उठे—

अहो ऐसे गुणवाले इस कुमार को पति बनाने का निश्चय करके सचमुच चन्द्रकला ने ठीक ही किया है। चन्द्रकला चन्द्र के साथ ही तो रहा करती है।

सेठ वरदत्त और कुमार श्रीचन्द्रने राजा के सामने बहुमूल्य भेट रखी। राजा ने उसे स्वीकार कर प्रेम के साथ कुमार के लिये वापस कर दिया। कुमार ने भी उसे विनय के साथ मस्तक से लगा, उदार भाव से याचकों में वितरण कर दिया। ठीक ही तो है, किया हुआ दान मनुष्य को महत्ता प्रदान करता है।

वरदत्त ने कहा राजन्! आज मेरा अहोभाग्य है जो कुमार का व आपका शुभागमन मेरे गरीब घर में अतर्कित भाव से हो गया। मेरे जीवन इतिहास में आज से बढ़कर कोई दिन नहीं होगा ऐसा मैं मानता हूँ।

वरदत्त के आभार प्रदर्शन करके चुप हो जाने पर राजा दीपचन्द्र ने कुमार को लक्ष्य करके कहा–कुमार! राजा शुभगांग की राजकुमारी मेरी दौहिती चन्द्रकला नैमित्तकों के कथनानुसार विवाह की तैयारी के साथ यहां रह रही है। उद्यान के मंदिर में उसने आपके प्रति पूर्व पुण्य संस्कारों से प्रेरित हो पतिभाव धारण कर लिया है। वह अपने संकल्पों पर मेरु के समान दृढ़ भी है। अतः आप हमारी प्रार्थना से उसका पाणिग्रहण कर उसकी इच्छाओं को पूरी करें और हमें कृतकृत्य बनावें।

राजा के वचन सुन कुमार ने बड़े धीरे गंभीर वचनों से कहना शुरु किया देव! बड़े लोगों को उत्तर देना एक प्रकार की धृष्टता है उसके लिये मुझे क्षमा करें। उत्तर न देना भी दुर्विनीतता का कारण न बन जाय ऐसा सोच कर कुछ कहता हूँ आप ज़रा गौर फरमावें।

मैं अपने पिता से केवल क्रीड़ा करने की आज्ञा लेकर ही घर से निकला हूँ। जाति से मैं एक वणिक पुत्र हूँ। बनिये के घर में राजकन्या को बनियानी बनकर रहना होता है, जो आपके कुल की शोभा का कारण न होगा। कहाँ वैश्य घर और कहां राजमहल की लीला? इसका परिणाम पत्थर के नीचे दबी हुई अंगुली की तरह दुःखदायी ही होगा। बिना विचार किये हुए कार्य के लिये हमेशा पश्चाताप करना पड़ता है अतः मेहरबानी कर इस प्रस्ताव को आप मेरे सामने उपस्थित ही न करें।

कुमार की इस निस्पृहता–भरी वाणी को सुनकर राजा रानी और राजकन्या का भाई वामांग सभी क्रमशः कहने लगे–कुमार! संपत्ती भाग्यकेअनुसार ही मिलती है। पिता अपने उसी रूप में रहता है और पुत्र राजा बन जाता है क्या इतिहास इस बात की साक्षी नहीं देता कि कई राजपुत्र मंत्रिपुत्र और श्रेष्ठिपुत्र भाग्य की परीक्षा के लिये पृथ्वी पर घूमते हुए पिता के बिना भी राज्य धन और कन्याओं के स्वामी नहीं बने?

हे भाग्यशाली! जाति क्या जन्म से ही होती है? नहीं नहीं गुणों से भी जाति का निर्माण होता है। इसी लिये शास्त्रों में गोत्र कर्म को परिवर्तन शील

माना है। आप के गुण क्षत्रियों से किसी तरह भी कम नहीं है। राधावेध की साधना से आपने अपने आपको सर्वश्रेष्ठ क्षत्रिय प्रसिद्ध किया है यह भूलने जैसी बात नहीं है। नैमित्तिकों ने जो संकेत किये थे वे सब आप में मौजूद हैं।

हे महानुभाव! स्त्री हमेशा पति का अनुसरण करती है। ऐसा करने में ही उसकी खानदानी बखानी जाती है। इसके विपरीत आचरण से स्त्री उभय भ्रष्ट मानी जाती है। अतः ससुराल के व्यवहार को मानने में अपयश की कोई बात नजर नहीं आती न उससे हमें कोई दुःख ही होगा।

हे विवेकी! पुण्योदय से ही स्त्री पुरुष सुखी होते हैं न कि बड़े-छोटे घर में जाने से? अतः वैश्यघर और राजमहल में अधिक अंतर हमारी नजरों में नहीं आता।

हे चतुरशिरोमणि! पद्मिनी चन्द्रकला ने आप को जो पति रूप में चुना है यह अविचारी कार्य नहीं है। अविचारी कार्य संताप का कारण होता है। सोच समझ कर किया हुआ काम सदा सुखदायक ही होता है।

अतः आप हमारी प्रार्थना पर गौर फरमावें और अपनी स्वीकृति प्रदान करावें।

राज-परिवार के अनुपम युक्ति-संगत आग्रह को देख कर कुमार ने विवाह के लिये मौन स्वीकृति दे दी। सर्वत्र आनन्द का उल्लास पूर्ण वातावरण छा गया।

क्रमशः

जैन विद्या का अनुशीलन : विदेशिक दृष्टि

शास्त्री प्रकाश वर्मा

प्राचीन भारतीय भाषाओं के अध्ययन तथा इसके साहित्य के इतिहास को सुनिश्चित करने में पाश्चात्य विद्वानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। योरोप के विभिन्न देशों के व्यक्ति भारत में व्यापार निमित आये थे लेकिन वे भारतीय जीवन और भारतीय प्राच्य विद्या के अगाध ज्ञान से प्रभावित हुए बिना न रह सके। १६५१ में अब्रांहम रोजन ने सर्वप्रथम भृतहरि की कुछ कहावतों का पुर्तगाली में अनुवाद किया। सतरहवीं एवं अठारहवीं शताब्दी में कालीदास का शकुन्तला नाटक, हितोपदेश, भगवत् गीता आदि का प्रकाशन अंग्रेजी तथा जर्मन भाषाओं में हुआ। शकुन्तला के जर्मन भाषा में अनुवाद को पढ़कर जर्मनी में औपन्यासिक भावधारा वाले समूह जिसमें महान् मेरे प्रमुख रहे है का भारतीय विचार और साहित्य के प्रति गहरा रूझान और सम्मान बढ़ा। उन्होंने व्याकरण की रचना की और अपनी भाषा में अनेक ग्रन्थों का अनुवाद किया, संपादन किया तथा समीक्षा की। योरोप के अनेक देशों ने अपने विश्वविद्यालयों में भारतीय प्राच्य विद्या के अध्ययन केन्द्रों को स्थापित किया। जिसमें जर्मनी के बोन तथा बर्लिन के विश्वविद्यालय प्रमुख रहे जहां से शोध का व्यवस्थित कार्य उन्नीसवीं शताब्दी में प्रारम्भ हुआ। अशोक के शिलालेखों की भाषा लिपि, शैली और विषय वस्तु को जानने में पाश्चात्य विद्वानों की शोध दृष्टि और परिश्रम ने बहुत सहयोग किया है।

योरोप में वैदिक साहित्य के शोध की आधारशिला रखने का श्रेय फ्रांस के महान् प्राच्यविद् यूजीन बर्नाफ (१८०१-५२) को है। उनके दो जर्मन शिष्यों, रूडोल्फ रोथ (१८२१-९५), ता मैक्समलर (१८२३-१९००) ने वैदिक अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। जर्मन विद्वानों ने वेदों पर शोध कार्य करते हुए जब अगाध ज्ञान राशि को पाया तो उन्होंने कहा कि वेदों के रचनाकार, जर्मन जाति के पूर्वज होने चाहिए। ऐसा

कहने के पीछे उनका उद्देश्य था कि वेदों जैसे श्रेष्ठतम साहित्य का निर्माण श्रेष्ठतम जाति ही कर सकती थी। मैक्समूलर ने सायणाचार्य के ऋग्वेद के भाष्य का तीस वर्षो तक भूख, प्यास और निद्रा की परवाह न करते हुए गम्भीर अध्ययन किया। १८४९ में जब भाष्य का प्रथम खण्ड प्रकाशित हुआ तो योरोप और भारत के विद्धानों ने कहा कि भारतीय सायणाचार्य की आत्मा ही जर्मनी में मैक्समूलर बन कर जन्मी है। मैक्समूलर के वेदों पर किये गये अनुसंधान कार्य ने ही सुनिश्चित किया कि विश्व साहित्य में ऋग्वेद सर्वाधिक प्राचीन साहित्य है। "Regveda is the oldest book in the library of the world."

वेद तथा संस्कृत साहित्य पर कार्य करते समय यह आवश्यक समझा गया कि भारतीय भाषाओं के इतिहास को समझने के लिए अन्य भारतीय प्राच्य भाषाओं पर भी शोध होनी चाहिए। जैन प्राकृत साहित्य पर योरोपीय विद्वानों का ध्यान इसलिये नहीं गया क्योंकि वे जैन धर्म को बौद्ध धर्म का ही संप्रदाय मानते थे। महावीर और बुद्ध के जीवन की समान घटनाओं से यह भ्रम बना रहा कि जैन और बौद्ध धर्म एक ही है क्योंकि इन दोनों धर्मों ने वेदों की ईश्वरीय शक्ति को अस्वीकार किया था।

महावीर और बुद्ध दोनों के जीवन की घटनाएं इतिहास के संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। जैन और बौद्ध साहित्य, भारतीय भाषाओं के इतिहास को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दे सका हैं। बौद्ध साहित्य पर शोध कार्य पहले शुरू किया गया था। प्रारम्भ में विशाल प्राकृत साहित्य की जानकारी विदेशों में नहीं थी। लेकिन ज्यों ज्यों भण्डारों से प्राकृत, संस्कृत तथा अपभ्रंश में प्राचीन जैन साहित्य सामग्री उपलब्ध होती गई, शोध कार्य भी व्यवस्थित होता गया। जैन आगम, निर्युक्ति, भाष्य आदि प्राकृत साहित्य में प्रतिपादित विषय, उनकी शैली तथा प्रयुक्त छन्दों के आधार पर उनकी यह धारणा पुष्ट हुई कि प्राचीन जैन साहित्य को अलग रखकर दो या तीन हजार वर्ष पूर्व के भारतीय जीवन और इतिहास की किसी प्रामाणिकता पर पहुँचना कठिन है।

भारतीय प्राचीन तथा साहित्य पर कार्य करते हुए हरमन ऑलडनबर्ग ने आख्यान सिद्धान्त, प्रतिपादित किया था। उनके अध्ययन का क्षेत्र संस्कृत

तथा पाली साहित्य ही था। अतः उन्होंने जैन विद्वान डा. आल्सडोर्फ से कहा था कि, आख्यान सिद्धान्त, को जैन कथा साहित्य के प्रामाणों से पुष्ट करना आवश्यक है। हरमन याकोबी ने जैन आगम सूत्रकृतांग के स्त्री परिज्ञा अध्याय के संबंध में लिखा है कि यह अध्याय दो हजार वर्ष के हिन्दु परिवार के रहन सहन की झलक देता है। इस अध्याय में उन कठिन नियमों का उल्लेख है। जिनका जैन मुनि भिक्षा के लिए घरों में जाते हुए पालन करते हैं। इस प्रकार के समीक्षात्मक अध्ययन के कारण, प्राकृत भाषा तथा जैन प्राच्य साहित्य पर शोधपूर्ण कार्य संस्कृत तथा पाली भाषा के समस्तर पर प्रारम्भ हुआ।

जर्मन विद्वान याकोबी ने जैन सिद्धान्त साहित्य का रचनाकाल चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के बाद का माना है। आगम भाषा तथा उनमें प्रयुक्त छन्दों के आधार पर इस काल को प्रमाणित किया हैं। यह स्पष्ट मत रहा है कि वेद भाषा में जिन छन्दों का प्रयोग, जिस शैली में हुआ है अगर वे ही छन्द, वही शैली जहां भी जैन तथा बौद्ध साहित्य में दृष्टिगोचर हुई है उसे प्राचीन माना है। जहां भी नये आर्या छन्द का प्रयोग हुआ है उसे उत्तर साहित्य माना हैं। वेदों में गायत्री, त्रिष्टुप, जगती, अनुष्टप वैताली, श्लोक आदि का प्रयोग हुआ है। वहां आर्या छन्द नहीं हैं। वेद छन्दों की रचना विधि में भी समय के अन्तराल से ह्रास हुआ और यह परिवर्तन भाषा के इतिहास को निर्धारित करने में सशक्त माध्यम बना हैं। सूत्रकृतांग आगम में वैताली छन्द के साथ प्राचीन आर्या छन्द में भी गाथाएं हैं। इस आगम के रचनाकाल का निर्धारण बौद्ध साहित्य तथा संस्कृत की ललित विस्तार गंथ में प्रयुक्त वैताली छन्दों की तुलना से किया गया है। बौद्धों का पाली साहित्य वैताली छन्द के प्रयोग काल के पूर्व का है। लेकिन वैताली छन्द का प्रयोग दक्षिणी बुद्धों के धम्मपद में हुआ है। संस्कृत की रचना ललित विस्तार में इसी छन्द का हास दृष्टिगोचर होता है। अतः यह प्रमाणित होता है कि जैन सिद्धान्त साहित्य का रचनाकाल बौद्धों के पाली साहित्य के बाद का तथा ललित विस्तार से पूर्व का होना चाहिए। आगम साहित्य में आर्या गाथाओं का होना इस निर्णय को ही पुष्ट करता है क्योंकि बौद्ध पाली साहित्य तथा धम्मपद में आर्या छन्द बिल्कुल नहीं है।

आर्या छन्द का प्रयोग बाद में ब्राह्मण , प्राकृत, संस्कृत तथा उत्तरी बौद्धों के साहित्य में देखा गया है। इसी तरह जैन प्राचीन साहित्य में त्रिष्टुप छन्द पाली साहित्य की अपेक्षा नया है लेकिन ललित विस्तार की अपेक्षा पुराना है। ललित विस्तार में जिन कृत्रिम छन्दों का उपयोग हुआ वह जैन साहित्य में नहीं है। इन सभी प्रमाणों से यह माना गया है कि जैन साहित्य पाली साहित्य और ललित विस्तार के बीच के समय का होना चाहिये। बुद्धों का पाली साहित्य ३७७ वर्ष ईसा पूर्व में लिखा जाना प्रो. मेक्समूलर ने माना हैं अतः अगर यह बुद्ध साहित्य का समय सही है तो जैन सिद्धान्त साहित्य का रचनाकाल चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के बाद का होना चाहिये। ललित विस्तार का रचनाकाल ईसा सम्वत् ६५ माना जाता है। अतः जैन आगम का रचनाकाल इन दोनों के बीच होना चाहिए। यह रचनाकाल भद्रबाहु की मृत्यु के बाद आता है जिसे जैन मत भी स्वीकार करता है। भद्रबाहु को दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों परम्पराएं स्वीकार करती है। इस प्रकार प्राचीन आगम साहित्य का रचनाकाल महावीर निर्वाण के २०० वर्ष बाद का होना, याकोबी के मत के निकट प्रतीत होता है।

व्यवस्थित शोधकार्य आरम्भ होने के पूर्व जैनों पर छुट-पुट लेख तथा उनका प्राच्य साहित्य पाश्चात्य विद्वानों ने प्रकाशित किया था। डॉ. एफ बुचानन ने अपनी मद्रास से मैसूर की यात्रा के वर्णन में जैन श्रावकों का उल्लेख किया हैं। कालिन मेंकेजी ने १८०७ में जैनों का वर्णन शीर्षक से तीन लेख ऐशियाटिक शोध पत्रिका में प्रकाशित किए है। कार्लबुलक ने १८०७ में हिन्दुओं के धर्म और दर्शन पर लेख प्रकाशित किए जिसमें उन्होंने आचार्य हेमचन्द्र को अभिधान चिन्तामणि तथा कल्प सूत्र के आधार पर जैन सिद्धान्तों का विवरण प्रस्तुत करते हुए २१ पृष्ठ की समीक्षात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की। उसकी मुख्य बाते ये है।

क. संख्य दर्शन के अनुसार जैनों ने भी पदार्थ को अविनाशी माना और जगत को आदि अनन्त।

ख. जगत का वर्णन पुराणों से प्रायः मिलता जुलता है यद्यपि जैनों ने इसका विस्तार किया है।

ग. अंहिसा का सिद्धान्त बुद्धों की भांति ही है केवल व्यवहार में जैनों ने इसका विस्तार किया है।

घ. जीवन, जन्म, ब्याह, मृत्यु में ब्राह्मणों की संस्कार विधि का ही पालन करते है।

ङ. श्रमण शब्द का उपयोग बुद्धों की भांति ही हुआ।

कार्लब्रुक ने प्रसिद्ध युनानी दूत मैगस्थनीज के वर्णन को उद्धत किया है कि भारत में दो प्रकार के पुजारी है। ब्राह्मण और श्रमण। ब्राह्मणों का आदर अधिक है क्योंकि उनके सिद्धान्तों में समरूपता है। ब्राह्मण लोग ग्रीक वासियों की भांति मानते है कि यह जगत कालक्रम से बनता और विघटित होता है, यह गोलाकार है। ईश्वर कर्त्ता है, सर्व व्यापक है। जल, प्रकृति को रूप देने में प्रमुख है। बहुत सी बातें ग्रीकों और हिन्दुओं की मिलती है। प्लेटों की भांति ब्राह्मणों ने आत्मा को अमर माना है, स्वर्ग नरक माना है।

युनानी विद्वान पोरवाइफस ने लिखा है कि श्रमण किसी जाति के नहीं होते थे और वे केवल आध्यात्मिक अध्ययन किया करते थे।

इसी भांति एच. एच. विल्सनने भी हिन्दुओं के धार्मिक सम्प्रदाय शीर्षक लेख में जैनों की चर्चा की हैं। फ्रेंकलिन ने १८२७ में बौद्धों के साथ जैनों पर भी गवेषणात्मक निबंध प्रकाशित किए। ये लेख जैन परम्परा के परिचय मात्र से अधिक नहीं थे। हिन्दू अथवा बौद्ध परम्परा के एक संप्रदाय के रूप में, जैनों को स्वीकार किया था।

स्टेबन्सन पहला योरोपीय विद्वान था जिसने आगम प्राकृत के सहारे कल्प सूत्र तथा नवतत्व प्रकारण का १८४८ में अंग्रेजी में अनुवाद किया। अनेक पाश्चात्य विद्वानों की रूचि जैन साहित्य की ओर गई और अनेक लेख प्रकाशित हुए जिसे गुरीनोट ने जैनों की संदर्भ ग्रन्धि सूची में संकलन किया है। यह ग्रंथ अपने आप में अद्वितीय ग्रन्थ साबित हुआ है। इस ऐतिहासिक कार्य के साथ एक बहुत साहसिक कदम डॉ. कार्ल व्यूलर तथा जर्मन योकोबी ने उठाया जब उन्होंने राजकीय आज्ञा प्राप्त कर भारत भर में भ्रमण कर जैन भण्डारों से पाण्डुलिपियां एकत्रित की। उन्होंने जैसलमेर, झालावाड़ पाटन, दक्षिण में मूदविदड़ी तथा महाराष्ट्र के अनेक स्थानों की यात्रा कर विरल जैन

प्राच्यं साहित्य को एकत्रित कर, ब्रिटिश सरकार से आज्ञा प्राप्त कर उस साहित्य को बर्लिन विश्वविद्यालय में भेज दिया। यद्यपि पाण्डुलिपियों का चयन करते समय ध्यान रख गया था कि जिसकी एक से अधिक प्रति हो वही भारत से बाहर ले जाई जाए लेकिन इतनी सावधानी संभव नहीं थी। कारण यह था कि प्राचीन लेखन पद्धति में एक से अधिक कथाएं तथा तात्विक विषयों का प्रतिपादन एक ही साथ ग्रंथ में कर दिया जाता था। प्राचीन पुस्तकों में विषय समाप्त होने पर अंतिम पृष्ठ पर अलंकृत रूप में मुद्रक, प्रकाशक और तिथि आदि का विवरण सूचक लेख होता था जिसे पुष्पिका कहते थे। आजकल यह लेख मुख पृष्ठ पर होता हैं। एक कथा अथवा कोई विषय के समाप्त होने पर यद्यपि अंतिम पृष्ठ पर पुष्पिका होती थी लेकिन दूसरी कथा उसी ग्रन्थ में आगे शुरु कर देने से पहली कथा की पुष्पिका बीच में ही रह जाती थी। जब तक सारे गंथ को न पढ़ा जाए उसमें वर्णित विषय सूची का पता नहीं लगता था। डा. आल्सडार्फ ने लिखा है कि गुणाढ़्य की वृहद कथा की प्राचीनतम कृति बर्लिन विश्वविद्याल में है। इस कृति का पता उस समय लगा जब डा. आल्सडार्फ वासुदेव हिण्डी की पाण्डुलिपि का अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने पाया कि उसी में वासुदेव हिण्डी की समाप्ति पर गुणाढय की वृहद कथा भी लिखी गयी है।

बर्लिन में इस तरह जैन आगम साहित्य तथा प्राचीन साहित्य का अच्छा भण्डार बन गया। अल्बर्ट वेबर जो कि उस समय जर्मनी में भारतीय प्राच्य विद्या के अग्रणीय विद्वान थे उन्होंने उस साहित्य की ग्रंथ सूची प्रकाशित की। यह कार्य कठिन था क्योंकि उन दिनों जर्मनी में जैन विद्या तथा प्राकृत भाषा की जानकारी बहुत कम थी। अलबर्ट वेबर ने प्रकाशित गंथसूची के संबंध में लिखा है कि मेरी आंखों की रोशनी इस ग्रंथ में समाहित है। ग्रंथसूची के साथ वेबर ने आगमों के सारांश को भी प्रकाशित किया। यह कहना अप्रांसगिक नहीं होगा कि प्रकाशन के कार्य को आगे बढ़ाने में जैन श्रावक राय धनपत सिंह बहादुर का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा कि उन्होंने सम्पूर्ण जैन आगमों को प्रकाशित कर योरोप के देशों को सुलभ कर दिया।

याकोबी ने १८७९ में भद्रबाहु का कल्प सूत्र का समीक्षात्मक अध्ययन किया जो कि भाषा विज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त मौलिक था और इस साहित्य ने जर्मनी में जैन विद्या पर शोध के द्वार खोल दिए। याकोबी ने १८८४ में आचारंग तथा कल्प सूत्र का आंग्ल भाषा में अनुवाद तथा सम्पादन किया । इसके साथ ५३ पृष्ठों में जैन धर्म दर्शन पर समीक्षात्मक प्रस्तावना लिखी। इस आगम साहित्य का प्रकाशन उस योजना का अंग था जिसमें प्रो. मैक्समूलर पूर्व के पवित्र गंथ नामक सीरीज का प्रकाशन कर रहे थे। इसी सीरीज में १८९४ में उत्तराध्यन तथा सूत्रकृतांग आगमों का अनुवाद प्रकाशित हुआ। याकोबी ने पुनः ४१ पृष्ठों में अनेक तुलनात्मक विषयों पर प्रस्तावना लिखी। याकोबी द्वारा चार आगम अनुवादित हो जाने से पाश्चात्य शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी तथा प्रामाणिक, साहित्य मिल गया। याकोबी ने अपनी प्रस्तावनाओं में जैन परम्परागत मान्यताओं से हटकर अपनी धारणाओं को भी निम्न प्रकार से प्रकट किया है।

क. ग्रीक ज्योतिष का प्रभाव भारत में ईसा की तीसरी शताब्दी के बाद आया है। जैनों का ज्योतिष इससे पूर्व ही स्वतन्त्र रूप से स्थिर हो गया प्रतीत होता है। क्योंकि अगर जैन ज्योतिष पर ग्रीक का किंचित भी प्रभाव होता तो इसमें इतनी भयंकर विसंगतियां नहीं होती।

ख. लेश्या जैनों का मौलिक विषय नहीं हैं, यह आजीविकों से लिया प्रतीत होता है।

ग. आर्या छन्द में रचित आगम साहित्य, बाद का रचित साहित्य है। वेद छन्दों में रचित साहित्य ही प्राचीन है।

जैन विद्या पर शोध कार्य प्रारम्भ होने से पूर्व वेद साहित्य तथा बौद्ध साहित्य पर पाश्चात्य जगत में बहुत कार्य हो चुका था। प्रारंभ में यह भ्रम बना रहा कि जैन धर्म, हिन्दू धर्म अथवा बौद्ध धर्म का ही एक संप्रदाय है। परस्पर में अनेक समानताएं होने के कारण ऐसी धारणा का होना स्वाभाविक था। ज्यों-ज्यों अध्ययन का विस्तार होता गया यह धारणा निर्मूल होती गई फिर भी वेबर जैन धर्म को बौद्ध धर्म का ही सम्प्रदाय मान रहे। लेकिन याकोबी ने

स्पष्ट मत दिया कि जैन धर्म बौद्ध धर्म का समकालीन नहीं है। अपितु प्राचीन धर्म है। बात में तो ल्यूडर्स ने प्राचीन जैन शिलालेखों पर विशाल कार्य किया है। शैरपिन्टर ने उत्तराध्ययन पर समीक्षात्मक ग्रंथ लिखा। १९२५ में ग्लेन्श्रेप ने जैन मान्यता पर पुस्तक प्रकाशित की उसमें कर्म, ज्ञान संसार, मोक्ष, उपशम श्रेणी, गुणस्थान, लेश्या आदि तात्त्विक विषयों का विवरणात्मक संग्रह है, समीक्षा कम है।

आगमों के सम्पादन के कार्य को आगे बढ़ाते हुए ल्यूमैन ने उववाई सूत्र का सम्पादन किया। आवश्यक सूत्र के कार्य में अत्यन्त परिश्रम करना पड़ा। क्योंकि पाण्डुलिपियों के अतिरिक्त छपी हुई पुस्तकों का तो अभाव था। पाण्डुलिपियों की हालत दयनीय थी और अक्षर पूर्ण रूप से पढ़े नहीं जा रहे थे। उनके स्थलों पर नामों का संकेतों द्वारा उल्लेख था। संवाद प्रश्नोत्तर लंबी तालिकाएँ तथा छन्दों के प्रयोग से भाषा भी अटपटी लगती थी। प्राचीनतम प्रमाणित पाण्डुलिपियों का अभाव था। इस पर भी ल्यूमैन ने सार्थक कार्य किया है। ल्यूमैन का कार्य प्रायः जर्मन भाषा में है। आवश्यक साहित्य पर १२ गुणा १८ की बढ़ी साईज में कुल ५६ पृष्ठों की पुस्तक छपी है। अब इस पुस्तक का प्रकाशन बन्द है। १९३४ में छपी इस पुस्तक का सम्पादन शूब्रिंग ने किया। तथा जर्मन भाषा में ही सम्पादकीय लिखा। ल्यूमैन का निधन युवा अवस्था में हो गया था। अतः उसके कार्य की विशाल योजना आगे नहीं बढ़ सकी। ल्यूमैन के आगमेतर कार्य के अन्तर्गत हरिभद्र की सम्मराइचकहा, सिद्धिर्षी उपसमितिभव प्रपंचकथा आदि पर समीक्षात्मक शोध का कार्य किया जो कि भारत में ही प्रकाशित हुआ था। ल्यूमेन ने संकेत किया था कि कथाएं जैनेत्तर साहित्य में भी उपलब्ध है।

ल्यूमैन के शिष्य शूब्रिंग भारतीय समाज में बहुत लोकप्रिय रहे है। शूब्रिंग की पुस्तक, जैनों के सिद्धान्त, बहुत ही प्रसिद्ध हुई है। इस पुस्तक में जैन इतिहास पर शोध तथा आगमों की भाषा तथा जैन दर्शन, विश्व संरचना, कर्म, गुण्स्थान आदि विभिन्न विषयों पर वर्णन किया है। इस पुस्तक के अतिरिक्त आचारांग पर समीक्षात्मक प्रकरण प्रस्तुत किया, बृहद्कल्प सूत्र तथा व्यवहार निशीथ के मूल पाठों का संशोधन भी किया।

डा. आल्सडोर्फ अपने को डा. शूब्रिंग का शिष्य मानते थे क्योंकि शूब्रिंक ने ही आल्सडोर्फ को अपभ्रंश पर कार्य करने को प्रेरित किया था। वे वर्षों तक पाश्चात्य जगत में प्रमुख इण्डोलोजिस्ट रहे। भारतीय प्राच्य विद्या पर कार्य करते हुए जैन विद्या की ओर आल्सडोर्फ का झुकाव अधिक रहा वे भारत में अनेक बार आए। याकोबी के बाद १९५१ में आल्सडोर्फ जैसलमेर के भण्डारों में गए और अनेक पाण्डुलिपियों की माइक्रों फिल्म बनाई। जैन समाज और जैन आचार्यों के साथ रह कर जैन संस्कृति की परम्पराओं को भी निकट से देखा। कुमार पाल प्रतिबोध, हरिवंश पुराण, अपभ्रंश साहित्य, पंचतंत्र, उत्तराध्ययन सूत्र आदि विविध ग्रंथों पर विस्तृत कार्य किया है। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व वे जर्मनी भाषा में ही लिखते रहे। लेकिन बाद में आंग्ल भाषा में भी छुटपुट लेख तथा पुस्तके लिखी। उत्तराध्ययन में आर्य छन्द पर आंग्ल भाषा में महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित हुई।

इन गवेषणाओं में जर्मन विद्वानों को एक बात ध्यान में आई कि बौद्ध परम्पराओं के आचार्यों ने जो भी अतिरिक्त स्पष्टीकरण देना उचित नहीं समझा वह फूटनोट में लिखा, मूल पाठ की उन्होंने विकृति नहीं की। इसलिए बौद्ध साहित्य को जैन साहित्य की अपेक्षा अधिक प्रामाणिक माना क्यों कि जैन आचार्यों ने कई स्थलों पर विषय को अधिक स्पष्ट करने के लिये मूल पाठ में संशोधन कर डाला, कुछ नया भी लिख कर प्राचीन प्रकरण के साथ मिला दिया। इससे जैन आगमों के मूल पाठों में विकृति मानी गई है। उत्तराध्ययन सूत्र के अनेक स्थलों पर शोध कार्य कर इस पाठ को बदल देने से ही जो विज्ञतार में बताना चाहते थे। वह कार्य पूरा नहीं हुआ और अलग से टीकाओं में कटाओं को विस्तार में लिखना ही पड़ा। डा. आल्सडोर्फ ने मूल पाठों में जैनों द्वारा किये गए परिवर्तन के कारण को धार्मिक भावना की प्रबलता ही माना हैं।

जर्मन विद्वानों ने वेद साहित्य को सर्वाधिक प्राचीन माना है। वेदों में वेताली, अनुंष्टुप त्रिष्टुप, जगती, श्लोक आदि छन्दों में साहित्य की रचना हुई है। इन छन्दों को वेद छन्द कहा है। वेद छन्द को एक उपकरण के रूप में मान्यता देकर जर्मन विद्वानों ने समस्त प्राकृत तथा जैन साहित्य की जांच

की है। इसमें याकोबी, ल्यूमैन, शूब्रिग तथा आल्सडॉर्फ प्रमुख रहे हैं। इसी कारण यहाँ इन्हीं विद्वानों का विशेष उल्लेख किया है। इन्होंने भाषा साहित्य के माध्यम से छन्दों के उपकरण से, जैन साहित्य की चर्चा की है, इसके इतिहास का मूल्यांकन किया है। केवल वे ही आगम प्राचीन माने गये है जो वेद छन्दों में रचित है। इस आधार से शूब्रिंग ने केवल चार आगमों को वरिष्ठ (सीनियर) कहा है। वे है, आचारंग, दर्शवैकालिक, सूत्रकृतांग तथा उत्तराध्ययन। शूब्रिंक ने ये निर्णायक धारणा बना ली थी कि भारतीय परम्परा में पद्य साहित्य की रचना अत्यन्त प्राचीन रही है और वेद छन्द ही प्राचीनता के प्रतीक है। डा. आल्सडोर्फ ने अपने जीवन काल में प्रायः तीन चौथाई शोध लेखों में छन्द तकनीक को उपकरण के रूप में उपयोग किया हैं। विषय वस्तु, शैली आदि का भी ध्यान रखा गया है लेकिन छन्द तकनीक को सशक्त प्रमाण के रूप में उपयोग किया है। नन्दी सूत्र में वर्णित विभिन्न आगमों के वर्गीकरण को प्रमाणित न मानते हुये उन्होंने भाषा, शैली और छन्दों के आधार पर यह धारणा बनाई कि ये सभी आगम एक समय के रचित नहीं है। जिन आगमों में नये आर्या छन्द का प्रयोग पाया गया वे बाद के आगम माने गए । आल्सडोर्फ ने माना है कि कालक्रम में वेद में छन्दों के प्रयोग का प्रभाव घटा और आर्या छन्द का प्रयोग बढ़ा है। इसे उन्होंने सीमा रेखा मानते हुए भारतीय भाषा के इतिहास में लेखन शैली के बदलते हुए प्रभाव को बताया है।

इस जांच में केवल जैन आगम आचारंग का प्राचीन भाग ही पूर्ण रूप से वेद छन्दों में रचित पाया गया और आचारांग को प्राचीनतम घोषित किया गया। सूत्रकृतांग में चार आर्याछन्द है, दशवैकालिक में पाँच आर्याछन्द है तथा उत्तराध्ययन में १३० आर्या छन्द का प्रयोग मिला है। आर्या छन्द जहाँ भी प्राचीन रूप में मिला उसे वेद छन्द अन्तर्गम मान लिया गया लेकिन अन्य आगमों में नये आर्या छन्द के प्रयोग को उत्तरकालीन माना है। डा. आल्सडोर्फ ने इसी मान्यता के आधार से उत्तराध्ययन का विस्तार से कार्य कर यह सिद्ध करने के प्रयास किया कि अनेक पद्य बाद की टीकाओं तथा भाष्यों से लिये गये है। कहीं कहीं तो जैनेत्तर पद्य रचनाएं ही लगती है। विषय का भी विस्तार

से प्रतिपादन कर कई कथाओं के जैनेत्तर होने के भी संकेत दिए है। आल्सडोर्फ ने उत्तराध्ययन पर इतना गहरा शोध कार्य किया है कि एक पूर्ण ग्रंथ लिखा जा सकता है।

उत्तराध्ययन सूत्र पर आज तक जितने समीक्षात्मक ग्रंथ निकले है, जर्मन विद्वान द्वारा किये गए छन्द तकनीक कार्य की समीक्षा नहीं हुई है। व्याकरण की दृष्टि से, छन्दों के आधार से जर्मन विद्वानों ने जिन विषयों पर निर्णयात्मक धारणा बना ली है उस पर उहापोह होना आवश्यक हैं। जैन धर्मावलम्बी, इस शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्षों का उपयोग कर परम्परागत मान्यताओं को ठोस प्रमाण दे सकते है। किन्तु धर्मग्रन्थों के बारे में कितनी ही शोध क्यों न कर ली जाए उनमें किसी परिवर्तन की संभावना नहीं है यह सही है कि गवेषणा के आधार पर अगर प्राच्य ग्रन्थों में लिखे तथ्य पुष्ट हो जाते है तो उस शोध का महत्व बढ़ जाता है। जर्मन विद्वानों के केवल जैन आगमों पर ही शोध पूर्ण टिप्पणी की हैं, ऐसी बात नहीं हैं। आल्सडोर्फ ने लिखा है कि आल्डनबर्ग तथा पाश्चात्य जगत के विद्वानों द्वारा किए गये वेदों पर शोध कार्य को स्वीकार कर क्या वेद पुनः लिखे जायेगे? यही प्रश्न जैन आगमों के संबंध में हो सकता है। फिर भी शोध कार्य की प्रमाणिकता किसी भांति कम नहीं हो सकती और आज भी शोध कार्य पाश्चात्य जगत में हो रहा है।

संस्कार आन्दोलन की प्रस्तुति सरस्वती वंदना

कैसेट–संयोजना एवं विवेचना– मुनि प्रवर विमल सागरजी महाराज स्वर–मुनि श्रीपद्यविमल सागरजी महाराज एवं गीता जैन (बान्द्रा-पश्चिम, मुम्बई)

प्रायोजक– भीनमाल (राज निवासी) पुखराजजी मनस्व शाहजी परिवार मोटा पोसीना (गुजरात) निवासी स्व. सूरजबेन चंपालाल शाह की स्मृति में चन्द्रिकाबेन धरमचंद शाह

मनुष्य का सर्वांगीण विकास उसके आध्यात्मिक विकास से ही सम्भव है। जैन धर्म में आध्यात्मिक विकास को सर्वोपरि रखा गया है इसी हेतु जैन धर्म में सरस्वती आराधना का विशेष महत्व है। सरस्वती विद्या और ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी है और बिना ज्ञान के आध्यात्मिक चेतना की प्राप्ति असम्भव है। कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य ने भी ज्ञान प्राप्ति के लिये सरस्वती की आराधना की थी। आज विश्व की प्राचीनतम सरस्वती प्रतिमा जो उत्खनन में मिली है, वह जैन प्रतिमा है। मथुरा के कंकाली टीले, बीकानेर व पल्लू से प्राप्त मूर्ति तथा अभी हाल में फतेहपुर सीकरी के उत्खनन से प्राप्त सरस्वती की मूर्ति अत्यन्त आकर्षणीय है। मुनिश्री विमल सागरजी विगत कई वर्षों से समाज में सरस्वती की आराधना की चेतना जागृत करने का प्रयास कर रहे हैं। प्रतिवर्ष सरस्वती की आराधना करवाते है। सरस्वती वंदना पर कैसेट निकलना उनके इसी प्रयास का फल है। घर घर में सरस्वती आराधना हो ताकि लोग ज्ञान की महिमा से परिचित हों मुनि महाराज ने इसी भावना से यह कैसेट बनाया है। जिसमें ताल और लय के संगम पर आधारित मधुर सुरों के साथ सरस्वती देवी की स्तुति व भक्ति गीत की प्रस्तुति की गयी है जो निश्चय ही चित्त को निर्मलता और शान्ति तो प्रदान करती ही है साथ ही हमारे आध्यात्मिक ज्ञान को भी उर्द्धमुखी बनाती है।

भगवान महावीर फाउण्डेशन—भगवान महावीर फाउण्डेशन ने २००३ के अवार्ड चयन के नामांकन आमंत्रित करने के लिए प्रेस विज्ञप्ति जारी की हैं। इस संस्थान के प्रबन्ध न्यासी श्री सुगालचन्दजी ने बताया कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी महावीर फाउण्डेशन तीन पुरस्कार प्रदान करेगा। प्रत्येक पुरस्कार की राशि पाँच लाख रुपये नकद, प्रशस्ति पत्र एवं भगवान महावीर की प्रतिमा स्मृति चिह्न स्वरूप प्रदीन की जायेगी। पुरस्कार निम्नांकित तीन क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्यों के लिए दिये जायेंगे।

१. अहिंसा एवं शाकाहार का प्रचार-प्रसार
२. शिक्षा एवं चिकित्सा
३. सामाजिक एवं सामुदायिक सेवा

पुरस्कारों के लिए नामांकन १५-८-२००३ के पूर्व फाउंडेशन कार्यालय में पहुंच जाने चाहिये। स्व नामांकन स्वीकार नहीं किये जायेगें। श्री जैन ने आगे बताया कि पुरस्कार निर्णायक समिति में भारत के गणमान्य महानुभाव हैं। उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एम.एन. वेंकटचेल्लैया इस समिति के अध्यक्ष हैं।

इस संस्थान का लक्ष्य है कि केवल भारतीय नागरिक एवं संस्थाएं जो कि भारत में स्थिति हैं और देश में उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं, इन पुरस्कारों की पात्र होगी। साधारणतया हाल में किये गये कार्य ही पुरस्कारों के लिए विचारणीय होंगे। पुरस्कार निर्धारण मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर करेगा कि इनके प्रयासों से आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों, जैसे अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जन जाति तथा महिलाओं को कितना लाभ पहुँच रहा है।

प्रेषक
सुगालचन्द जैन
न्यासी

राष्ट्रपति डॉ. कलाम से आचार्य श्री नगराजजी का वार्तालाप व ग्रन्थ भेंट— ३० अप्रैल, २००३। के दिन राष्ट्रीय एकता समिति के संस्थापक व सुप्रसिद्ध जैनाचार्य श्री नगराजजी, डी. लिट्. ने अपने सहयोगी उपाचार्य श्री मानमलजी, मुनिश्री डॉ. संजय कुमारजी, मुनिश्री प्रमोद कुमारजी तथा राष्ट्रीय एकता समिति के वरिष्ठ प्रतिनिधियों के साथ राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम से भेंट की तथा उन्हें अपनी सद्यः प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक **आगमा एण्ड त्रिपिटका : ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ लॉर्ड महावीर एण्ड बुद्धा, वोल्यूम-२** प्रदान की।

भारतीय विद्या भवन के एस्ट्रोलोजी कॉलेज का वार्षिक अधिवेशन व सेमीनार सम्पन्न— नई दिल्ली, १२ अप्रैल २००३। भारतीय विद्या भवन इन्स्टीच्यूट ऑफ एस्ट्रोलोजी का वार्षिक अधिवेशन सेमीनार का आयोजन यहां इण्डियन इन्स्टीच्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन ऑडिटोरियम, महात्मा गांधी रोड (रिंग रोड), आई. टी. ओ. में रखा गया जिसमें लगभग ५०० ज्योतिष शोधार्थियों ने भाग लिया। समारोह में मुख्य अतिथि हस्त रेखा विशारद उपाचार्य श्री मानमलजी थे।

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)

लाडनूं-३४१ ३०६ (राजस्थान)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम के अन्तर्गत मान्य विश्वविद्यालय)

निम्नलिखित पाठ्यक्रमों के लिए आवेदन-पत्र आमंत्रित किये जाते हैं।

प्रवेश सूचना : सत्र २००३-२००४/०१

(क) नियमित पाठ्यक्रम

स्नातकोत्त : १. एम. ए. जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन, २. एम. ए. प्राकृत एवं जैनागम, ३. एम. ए./ एम. एस-सी. जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान एवं योग ४. एम. ए. अहिंसा एवं शांति, ५. एम. एस. डब्ल्यू क्र. सं. १ से ४ गैर पारम्परिक पाठ्यक्रमों में चयनित विद्यार्थियों को आकर्षण छात्रवृत्तियां देने का प्रावधान है।

स्नातक : १. बी.एस. डब्ल्यू २. बी.ए. (केवल महिलाओं के लिए) अनिवार्य विषयः १. सामान्य हिन्दी अथवा सामान्य अंग्रेजी (केवल प्रथम वर्ष में) २. जैन विद्या अथवा जैन एवं जैनेतर दर्शन

ऐच्छिक विषय : १. आगम विद्या एवं प्राकृत साहित्य, २. हिन्दी साहित्य, ३. जीवन विज्ञान, ४. अहिंसा एवं शांति ५. संस्कृत, ६. अंग्रेजी साहित्य ७. राजनीति विज्ञान ८. इन्फरमेशन एण्ड कम्यूनिकेशन टेक्नोलोजी (कम्प्यूटर) (कोई दो)

अर्हता : स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के लिये १०-२-३ स्कीम के अन्तर्गत न्यूनतम ५०प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक अथवा समकक्ष। स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए न्यूनतम ५० अंकों के साथ १०-२ या समकक्ष। (अनु. जाति/जनजाति/पिछड़ावर्ग/विकलांग/महिलाओं के लिये ५प्रतिशत अंकों की छूट) पुरूष और महिलाओं के लिए पृथक-पृथक छात्रावास की व्यवस्था।

त्रैमासिक प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम—प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान एवं योग शिक्षा अर्हता—१०-२ या इसके समकक्ष। अवधि – प्रथम बार– जुलाई से सितम्बर, २००३; दूसरी बार– अक्टूबर से दिसंबर २००३; तीसरी बार– फरवरी से अप्रैल, २००४.

(ख) नियमित पाठ्यक्रम

१. एम.ए. जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन २. एम.ए./एम.एस–सी. जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग। अर्हता : किसी भी मान्यता प्राप्त

विश्वविद्यालय १०–२-३ स्कीम के अन्तर्गत स्नातक उपाधि अथवा समकक्ष।

ब्रिजकोर्ष–एक वर्षीय उन विद्यार्थियों के लिये जो १०-२-३ स्कीम के अन्तर्गत स्नातक उत्तीर्ण नहीं हैं और संस्थान द्वारा संचालित स्नातकोत्तर में प्रवेश लेने के इच्छुक हैं।

स्नातक (बी.ए.) : अनिवार्य विषय : १ सामान्य हिन्दी अथवा सामान्य अंग्रेजी (केवल प्रथम वर्ष में) २. जैन विद्या अथवा जैन एवं जैनेत्तर दर्शन **ऐच्छिक विषयः१** आगम विद्या एवं प्राकृत साहित्य, २. संस्कृत, ३. जीवन विज्ञान, ४. अहिंसा एवं शांति ५. हिन्दी साहित्य, ६. अंग्रेजी साहित्य। (कोई दो) अर्हता– १०-२ या समकक्ष उपाधि या संस्थान से उसी सत्र में बी.ए. प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण।

बी.ए. प्रवेश परीक्षा (उन विद्यार्थियों के लिए जो १०-२ उत्तीर्ण नहीं हैं अथवा कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की है परन्तु १८ वर्ष की आयु १ अगस्त २००३ तक पूरी करते हों।) **दिनांक १८–१९ अगस्त, २००३ को विभिन्न केन्द्रों पर आयोजित होगी।** इसमें दो प्रश्न पत्र होंगे। प्रथम पत्र : सामान्य हिन्दी/सामान्य अंग्रेजी द्वितीय पत्रः सामान्य ज्ञान। फार्म जमा कराने की अंतिम तिथि–०२ जून २००३; ५०/- विलम्ब शुक्ल सहित १५ जून, २००३ प्रवेश शुल्क–रुपये ४००/ - उत्तीर्ण विद्यार्थी सत्र २००३-२००४ में बी. ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश के योग्य होंगे।

प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम–**अण्डर स्टेंडिंग रिलीजन अर्हताः** १०-२ अवधि : चार माह

त्रैमासिक प्रमाण पत्र--अहिंसा प्रशिक्षण अर्हता : १०-२ या समकक्ष

अवधि : प्रथम बार अगस्त से अक्टूबर २००३; दूसरी बार अक्टूबर से दिसम्बर,२००३

आवेदन पत्र : (अ) बी.ए. प्रवेश परीक्षा, प्रमाण पत्र पाठ्यक्रमों के लिए कार्यालय से फार्म निःशुक्ल उपलब्ध हैं। २७/- रूपये का डाक टिकट लगा लिफाफा भेजकर डाक द्वारा भी प्राप्त किया जा सकता है। (ब) अन्य पाठ्यक्रमों के लिए आवेदन प्राप्त सहित प्रोस्पेक्टस ५०/- रूपये नगद अथवा डाक द्वारा ७५/- रूपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं के नाम भेजकर प्राप्त किये जा सकते हैं।)

कार्यालय में फॉर्म जमा कराने की अन्तिम तिथि-नियमित पाठ्यक्रम स्नातक-२५जून, २००३ एवं स्नातकोत्तर-१० जुलाई,२००३, पत्राचारपाठ्यक्रम-१३अगस्त२००३.

(डॉ. जगतराम भट्टाचार्य)
कुलसचिव

महानगर कोलकाता में शासन प्रवर्तिनी, दिव्याविदुषी, मरुधर

ज्योति, तपस्वी चेतना सम्पन्ना साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी महाराज साहब का भव्य प्रवेश एवं समारोह

परम् आदरणीय युगप्रवर्तिनी, शासन प्रभाविका श्री विचक्षणश्रीजी महाराज साहब की आज्ञानुवर्तिनी शिष्या परम् मरुधरज्योति, दिव्य तेजस्विनी परमतम श्रद्धेया श्री मणि प्रभाश्रीजी म. सा. का चातुर्मास यापन के लिये कलकत्ता महानगर में दिनांक १५-०६-२००३ को भव्य प्रवेश सम्पन्न हुआ। सुबह ७.३० बजे बड़ा बाजार पंचायती मन्दिर से श्री संघ के साथ आपका भव्य प्रवेश माणिकतल्ला दादाबाड़ी में हुआ। इस मंगल अवसर पर जैन समाज के सभी समुदायों के गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। शासन प्रवर्तिनी महा प्रज्ञामयी श्री विचक्षणश्रीजी म. सा. के शताब्दी जन्म दिवस और उनकी अनुवर्तिनी श्री मणिप्रभाश्रीजी का क़ोलकत्ता महानगर में प्रवेश एक भव्य संयोग बना। इस मौके पर श्वेत वस्त्रावृता तपस्विनियों के पावन स्वर फूट निकले। श्रीहेमप्रज्ञाश्रीजी ने श्री विचक्षणश्री जी म. सा. की स्मृति में देशना देकर अपने मधुर कण्ठ से भक्ति संगीत द्वारा अपनी श्रृद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर साध्वी प्रमुखा मणि प्रभाश्रीजी महाराज सा. श्री की दिव्य देशना को सुनने नागपुर, धमतरी, रायपुर, इन्दौर आदि अनेक जगहों से बड़ी संख्या में श्रावक मौजूद थे। वहाँ उपस्थित हजारों की संख्या में एकत्रित समुदाय एकचित्त होकर महाराज साहब के प्रवचन को सुन रहा था। इस अवसर पर श्रेष्ठीवर्या पूनम चन्दजी डाकलिया की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीबाई डाकलिया पुत्र श्रीनिर्मल कुमारजी सुमतीचन्दजी के तरफ से केवल्यधाम तीर्थ (रायपुर) में एक मन्दिर निर्माण की घोषणा की है। केल्यधाम के अध्यक्ष श्री जसराजजी बरड़ीया रायपुर, श्रीलालजी लोढ़ा दुर्ग द्वारा डाकलिया परिवार का बहुमान किया गया।

इस मंगल प्रवेश के अवसर पर सर्वप्रथम श्रीमती भंवरीबाई रामपुरिया ने गुरुवर्या श्री विचक्षण श्रीजी महाराज साहब के चित्त पर माल्यार्पण किया व साध्वी श्री विद्युतप्रभाश्रीजी व हेमप्रज्ञा श्रीजी ने प्रार्थना द्वारा सभा का शुभारम्भ किया। श्रीदेवेन्द्र कुमारजी बोथरा अध्यक्ष चातुर्मास प्रबन्ध समिति, स्वागताध्यक्ष श्रीप्रेमचन्द्रजी मोघा, प्रवीन कार्यकर्ता श्रीज्ञानचन्दजी लूणावत, श्रीसोहनराजजी सिंघवी,

श्रीमती लता बोथरा और श्रीकान्तिलालजी मुकीम (मंत्री, चातुर्मास प्रबन्ध समिति) ने अपने-अपने वक्तव्य रखे। श्रीमोहनलालजी बरड़िया एवं श्रीमती रेखा लोढ़ा ने अपने मधुर भजनों से जनसमूह को मोह लिया। समारोह के पश्चात् दादागुरूदेव की पूजा एवं स्वधर्मी वात्सल्य का आयोजन किया गया।

समारोह को सफल बनाने में सकल संघ के कार्यकर्ताओं ने सम्पूर्ण रूप से सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

सकल श्रीसंघ
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ कोलकाता
चातुर्मास प्रबन्ध समिति

संकलन

ऐलोपैथी और महगी सर्जरी के के बदले ऐक्युप्रेशर चिकित्सा हृदय रोग के लिये सबसे ज्यादा उपयोगी।

हार्टअटैक, हृदयरोग का खतरनाक हमला, हार्ट स्ट्रोक! अरे अभी तो वह मेरे साथ बात कर रहे थे, और अनाचक छाती में दर्द शुरु हुआ, डॉक्टर को फोन किया, डॉक्टर आये उसके पहले........हृदय रोग का हमला कैसे आता है? आये तब क्या करना चाहिये? यह विचार आदमी को परेशान कर देता है। उसमें भी हृदयरोग की जानकारी के लिये ओन्जियोग्राफी, बाद में ऐन्जियोप्लास्टी या वायपास सर्जरी इत्यादि में आदमी शारीरिक और आर्थिक रूप से बरबाद हो जाता है, और सबसे ज्यादा तो बायपास या ऐन्जियोप्लास्टी कराने के बाद आपको फिर से अटेक नहीं आयेगा उसकी कोई गारंटी नहीं है। हॉ, थोड़े साल पहले बायपास सर्जरी किये हुए रोगी को १० साल की गारंटी डॉक्टरों से मिलती थी, परन्तु बायपास कराने के बाद ऐसे की किस्से सामने आये है, जिसमें डॉक्टरों के हाथ नीचे पड़े है।

डॉ. राजेन्द्र शाह हृदयरोग की चिकित्सा के लिये स्पेशियल एक्युप्रेशर ट्रीटमेंट के बारे में प्रकाश डालते हुए कहते है कि हृदयरोग होने में मुख्यतः हृदय को रक्त पहुँचानेवाली रक्तवाहिनिओं में ब्लोकेज दूर करने के लिये हम हृदय पर

स्पेशियल एक्युप्रेशर मसाज/ दान करके ब्लोकेज दूर करते है, साथ में मैं नेचरोपैथी डॉक्टर होने के कारण मरीज को क्या खाना-पीना चाहिये उसकी डायच देता हूँ। मेरी दो महिने की चिकित्सा से खास करके ८ से १० सीटींग में मरीज अच्छा हो जाता है। और पहले तीन चार सीटींग में मरीज के चेहरे पर फर्क महसूस दिखाई देता है। खास करके सप्ताह में एक सीटींग देने जाता हूं। जरूरत पड़ने पर सप्ताह में दो बार भी ट्रीटमेन्ट देने जाता हूं। इस एक्युप्रेशर चिकित्सा से मरीजका ब्लोकेज दूर हो जाता है, और बायपास, एन्जियोप्लास्टी जैसे मंहगी, पीड़ा देने वाली मुसीबतों से जल्दी मुक्ति मिलती है।

डॉ. राजेन्द्र शाह कहते है कि कोलोस्ट्रोल लेवल २५० एम. जी के अंदर होना चाहिये। अगर बढ़ने लगा तो डायेट करना शुरु कर देना चाहिये। जिससे ब्लोकेज की मुसीबत से बच जाओगे। एक्युप्रेशर चिकित्सा के फायदे के बारे में डॉ. राजेन्द्र शाह कहते है कि हृदय का एक्युप्रेशर चिकित्सा में ऑपरेशन की जरूरत नहीं पड़ती है, उसमें किसी प्रकार का खतरा नहीं है और कोई साईड इफेक्ट नहीं है कारण की हम इस चिकित्सा में कोई मेडिसिन नहीं देते और जीवनभर दवाइयां लेने को नहीं कहते हैं। एक्युप्रेशर को हमने शारीरिक दर्द तक ही सीमित रखा है लेकिन उसके गुण अनंत है।

डॉ. राजेन्द्र शाह हाल ही में दूसरी दो कोरीयन विकित्साका हृदय ब्लोकेज दूर करने के लिये उनका उपयोग करते है। बुहांग विकित्साका और पास विकित्सा। दोनों ही चिकित्सा बहुत उपयोगी है उससे ब्लड सरक्युलेशन में सुधार आता है। डॉ. राजेन्द्र शाह भारत में पहले व्यक्ति हैं जो हृदय ब्लोकेज दूर करने के लिये चार चिकित्साओं को उपयोग में लेते है।

आज कैन्सर, एड्स से लोग भयभीत है, परन्तु उसकी ट्रीटमेंट लंबी चलती है। जब हृदय रोग कई बार आदमी को एक झटकें में कहीं का नहीं रखता तभी हृदयरोग की योग्य चिकित्सा और बायपास सर्जरी या एन्जिप्लास्टी की खर्चीली, चिंताग्रस्त, दर्दनाक प्रक्रिया में से मुक्ति दिलाने के लिये ब्लोकेज की फरियाद न करनी पड़े और हृदय रोग से बचने के लिये लोगों को भारत में पहली बार अकेले हृदय रोग की चिकित्सा एक्युप्रेशर द्वारा करनेवाले डॉ. राजेन्द्र शाह को मिलना जरूरी है।

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 2247-6874, (Resi) 2246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071
Ph: 2288 1565 / 1603

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 2240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 2240 0098, 2247 1833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 2235 0623, (Resi) 2239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 2238-8677/1647, 2239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2348-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-4649, (Resi) 2247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 2464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 2247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-4755, (Resi) 2238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2233-1766, 2238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 2355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007,
Ph: 2239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 2247-7880, 2247-8663
(Res) 2247-8128, 2247-9546

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 2242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 2242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 2359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani,
Kolkata - 700 073, Phone : 2236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 2244-1309, (R) 2475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandani Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140
(Resi) 2352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2242-4483/9181, (O) 2238-1396/1871
Fax : 2231-2151, 2666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2220-5229/5121

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2230-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2302413

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019
Phone : 2287-0448

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

M/S. B.C. JAIN JEWELLER'S (PVT.) LTD.
Govt. approved valuer for Jewellery.
Director: Bimal Chand Jain/Vikash Jain/Vivek Jain
39, Burtolla Street, Kolkata - 700 007

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2239-6241/2950 (O) 2239-0581

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone: 2232 3876

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtala, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2238-0900 (M) 9830094325

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone: (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985,
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadalia@usa.net

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre
19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535
Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

WHILE PURCHASING HEASIAN, SACKING, YARN AND DECORATIVE FURNISHING FABRICS & OTHER JUTE PRODUCTS, PLEASE INSIST ON QUALITY PRODUCTION.

We are, always ready to meet the Exact type of your requirement.

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

"KANKARIA ESTATE"

6, Little Russel Street,
Kolkata - 700 071

A RECOGNISED EXPORT HOUSE

Cable : SWANAUCK, KOLKATA
Telex : 212396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone: 22479921/9720,22402683

Registered Office &
'JUTE MILL' at jagatdal 24-Parganas
BHATPARA 81-2757/2758/2038

एसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2230 0432, 2522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road, Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50⁰ C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

	Phone:
Gram "GANGJUTMIL"	2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591	2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN	2226-6283
	2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 2514-4496, 2513-1086, 2513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharad

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 2233-1609, 2239-8628

M.M. & P.O./W.B./R.N.P.–45/2003
VoL. XXVII. NO. 4. **TITTHAYARA** **July 2003**
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

卐

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666 7212/7225